नैतिक शिक्षा

1

H
028.5 Sh 24 N
SR 24 N

यह पुस्तक भारत के सभी राज्यों में शिक्षा-विभाग की ओर से स्कूल लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत हो गई है। अनेक प्राइमरी स्कूलों के मुख्य अध्यापकों ने पुस्तक को उपयोगी समझकर, बच्चों को शुरू से ही अच्छी आदतें डालने के लिए, बाल छात्र-छात्राओं को अच्छा और होनहार बनाने के विचार से यह पुस्तक अपने स्कूलों में सप्लीमेंटरी रीडर के तौर पर पाठ्यक्रम में लगा दी है।

Naitik Shiksha

नैतिक शिक्षा

(सचित्र, रोचक तथा शिक्षाप्रद कहानियाँ)

भाग १ Part I

MORAL EDUCATION
FOR
BOYS & GIRLS

सम्पादक Ed
धर्मपाल शास्त्री Dharmapal Shastri
एम० ए०

Kitabghar, Delhi CATALOGUED
किताबघर दिल्ली-३१

विश्व बाल-वर्ष का उपहार

H028.5
Sh 24 N

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Sh 24 N
00084225

© प्रकाशक

प्रकाशक : किताबघर
मेन बाजार, गांधीनगर दिल्ली-११००३१

संस्करण : 1993

मूल्य | दस रुपये

मुद्रक संजय प्रिंटर्स, मानसरोवर पार्क, दिल्ली-110032

NAITIK SHIKSHA Part-I (Hindi)
By : Dharampal Shastri M. A. Price Rs. 10.00

पाठ-क्रम

१. सत्य की जय हो ५
(सच्ची घटना; सत्य के लाभ; झूठ की हानियां; झूठे गडरिए की कहानी)

२. छात्रों का समय-पालन १०
(चींटी-झींगुर की कथा; समय-पालन के लाभ; समय-नाश की हानि; दैनिक-क्रम)

३. सदा प्रसन्न रहो १३
(ऋषियों की कथा; प्रसन्न रहने के उपाय; छात्रों के लिए प्रसन्नता के काम)

४. करो सेवा, मिले मेवा १८
(तीन कथाएं; तीन प्रकार की सेवा; छात्रों के लिए सेवा के काम)

५. दीन-दुखियों पर दया २१
(दीनबन्धु की कथा; राजा शिवि की कथा; छात्रों के लिए दया के काम)

६. महान् गुण—स्वच्छता २५
(लक्ष्मीदेवी की कथा; सफाई के छह नियम; छात्रों के लिए स्वच्छता के काम)

७. एकता में बल २८
(वृद्ध के तीन बेटों की कहानी; एकता के लाभ; छात्रों के लिए एकता के काम)

८. मैं मेहनत करूंगा ३२
(कौए की कहानी; जीवन में श्रम की आवश्यकता; श्रम के लाभ; छात्रों के लिए श्रम के काम)

९. क्या हमारे संगी-साथी अच्छे हैं ? ३५
(दो तोतों की कहानी; अच्छे-बुरे लड़कों की कहानी; छात्रों के लिए सत्संग के काम)

१०. मैं ईमानदार बनूंगा ३९
(ईमानदार तांगेवाले की कहानी; बेईमान दूधिए की कहानी; छात्रों के लिए ईमानदारी के काम)

११. बालकों का शिष्टाचार ४२
(पठान और अफ़गान की कहानी; खान-पान, बोलचाल, व्यवहार, विद्यालय के शिष्टाचार)

१२. आओ, हम-तुम मित्र बनें ४७
(आदर्श मित्रों की कथा; मित्र बनाने के लाभ; सच्चे मित्र की पहचान; छात्रों के लिए मित्रता के काम)

१३. अनुशासन में रहने वाले ५०
(बादशाह की कथा; अनुशासन के लाभ; छात्रों के लिए अनुशासन के काम)

"यदि शरीर और मन शुद्ध न हों तो मंदिर में जाकर महादेव की पूजा करना व्यर्थ है। चित्त का शुद्ध होना और दूसरों के भले के लिए उद्योग करना ही सभी उपासनाओं का सार है।"

—स्वामी विवेकानन्द

सत्य की जय हो !

सत्य का अर्थ—सत्य का अर्थ है–सच, अर्थात् ठीक-ठीक और सच्ची बात करना। उसमें से हम कुछ न छिपाएं और न अपनी तरफ से कोई बनावटी बात बनाएं।

सच्ची घटना– सत्य की यह घटना श्री गोपालकृष्ण गोखले के जीवन की है। तब वे एक विद्यालय में पढ़ते थे। एक दिन श्रेणी में अध्यापक जी ने घर पर करके लाने के लिए कुछ प्रश्न दिए। अगले दिन केवल गोपालकृष्ण गोखले के सभी उत्तर ठीक निकले, अन्य किसी के नहीं। इनसे प्रसन्न होकर अध्यापक जी गोखले को इनाम देने लगे। किन्तु यह क्या ? खुश होने के बदले गोखले रोने लगा। अध्यापक जी ने रोने का कारण पूछा तो गोखले बोला– "गुरुजी ! मैं झूठी बात के लिए इनाम लेना नहीं चाहता। सत्य बात यह है कि एक प्रश्न का उत्तर मैंने अपने एक साथी की कापी में देखकर लिखा है।" यह सुनकर अध्यापक जी और भी अधिक प्रसन्न हुए और बोले–"अब मैं यह इनाम तुम्हें सत्य बोलने के लिए दे रहा हूं।"

इस प्रकार गोपालकृष्ण गोखले बचपन से ही सत्यवादी थे। इसलिए बड़े होकर वे एक महान् नेता बने। हम भी सत्य बोलेंगे तो हम भी बड़े आदमी बनेंगे।

समझने की बातें–सत्य का मतलब केवल मुंह से सच बोलना ही नहीं।

सच बोलना तो आधा सत्य है। पूरे सत्य के तीन अंग हैं—(१) हम मन में सत्य बात सोचें, (२) हम मुंह से सत्य बात कहें, (३) हम हाथ-पांव से सच्चे काम करें। सत्य बोलना बड़ा सरल है। इसमें न रुपया-पैसा खर्च होता है और न हाथ-पांव थकते हैं। जैसी बात मन में है वैसी ही मुंह से कहो और वैसी ही करो—यही सबसे बड़ा सत्य है। सत्य-भाषण एक सुनहला नियम है।

"सत्य कहो जो मीठा प्यारा।
सत्य कहो मत कड़वा खारा।"

हमें ऐसा सत्य नहीं कहना चाहिए जो भले आदमी को बुरा लगे। जैसे अंधे को 'अंधा' और लंगड़े को 'लंगड़ा' कहकर चिढ़ाना ठीक नहीं है।

सत्य के लाभ—सत्य बोलने के अनेक लाभ हैं। सत्य बोलने से मनुष्य का मन साफ हो जाता है। उसकी सब बुराइयां धीरे-धीरे दूर हो जाती हैं। उनकी जगह मनुष्य में सब अच्छाइयां आ जाती हैं। सच्चे मनुष्य को सब प्यार करते हैं और उसका नाम प्रसिद्ध हो जाता है। सत्यवादी की बात पर सब लोग विश्वास करते हैं। वह निडर भी होता है। गांधीजी शरीर से दुबले-पतले थे पर वे अंग्रेजों की तोपों से भी नहीं डरते थे और सत्य कहते थे।

झूठ की हानियां—सत्य का उलटा असत्य है। इसी को झूठ कहते हैं। असली बात को मन में छिपाकर नकली बात मुंह से कहना असत्य है। मूर्ख लोग समझते हैं कि झूठ बोलना बड़ा आसान है। किन्तु बात इससे बिलकुल उलटी है। झूठ बोलना बड़ा कठिन है। सच्चाई को छिपाने के लिए अनगिनत बहाने बनाने पड़ते हैं। फिर एक बार झूठ बोल देने से काम नहीं चलता। पहले झूठ को छिपाने के लिए दूसरा झूठ बोलना पड़ता है। दूसरे के लिए तीसरा और तीसरे के लिए चौथा। इस प्रकार झूठ का चक्कर चलता रहता है। उधर झूठा आदमी डरता है कि झूठ का पता चल गया तो मैं पकड़ा जाऊंगा। होता भी ऐसा ही है।

झूठ खोटे सिक्के के समान है। जैसे खोटा सिक्का नहीं चलता। हो सकता है कि खरे नाम पर खोटा सिक्का भी कुछ दिन चल जाए। पर एक न एक दिन वह पकड़ा जाता है। लोग झूठे आदमी को बुरा कहते हैं। सरकार उसे दंड देती है। झूठे आदमी पर लोग विश्वास नहीं करते।

झूठे गडरिए की कहानी–एक गड़रिया था। वह गांव के बाहर जंगल में भेड़-बकरियां चराता था। एक दिन उसने लोगों का तमाशा देखने के लिए झूठ ही शोर मचा दिया–'शेर आया! बचाओ! बचाओ!' शोर सुनकर गांव के लोग दौड़ आये। गडरिए ने उन्हे चिढ़ाया और उनको खिल्ली उड़ाई। अगले दिन सचमुच शेर आ गया। झूठे गड़रिए ने फिर शोर मचाया–'शेर आया! बचाओ! बचाओ!' पर आज उस पर किसी ने विश्वास नहीं किया और उसे बचाने कोई नहीं आया। उसे शेर खा गया।

इस प्रकार झूठे आदमी पर कोई विश्वास नहीं करता अतः हमें सत्य बोलना चाहिए।

छात्रों के लिए सत्य के काम–

१. आज से हम मुंह से सत्य बोलेंगे। मन में सत्य सोचेंगे। हम हाथ-पांव से सच्चे काम करेंगे।

२. हम बड़ी से बड़ी कठिनाई से बचने के लिए भी असत्य न बोलेंगे।

३. हमसे कोई वस्तु टूट या खो जाएगी तो भी दंड के भय से झूठ नहीं बोलेंगे।

४. माता-पिता को सत्य बात बता देंगे।

५. यदि पाठ याद नहीं किया या लिखने का काम नहीं किया तो गुरुजी को सच-सच बता देंगे।

६. हम झूठा बहाना बनाकर बाजारों में घूमने के लिए गुरुजी से छुट्टी न मांगेंगे ।

७. यदि हम श्रेणी में हाजिर न रहे तो भी गुरुजी से झूठी बात नहीं कहेंगे ।

८. किसी लड़के की झूठी शिकायत नहीं करेंगे ।

९. परीक्षा में नकल नहीं करेंगे ।

छात्रों का समय-पालन

समय-पालन का अर्थ—समय-पालन का अर्थ है सब काम समय पर करना। घड़ी समय बताने के लिए है। विद्यालय की घंटियां हमें समय पर काम करने की प्रेरणा देती हैं। प्रातःकाल मुर्गा समय पर जागने को ओर संकेत करता है। हमें सब काम समय पर करने चाहिएं। मनुष्य हो या पशु, सुखी वही रहता है जो समय का पालन करता है।

सच्ची घटना—एक चींटी थी। एक झींगुर था। दोनों पक्के मित्र थे। एक बार गर्मियों का समय आया। चींटी ने खूब परिश्रम करके गेहूं-बाजरे के दाने अपने बिल में इकट्ठे कर लिए। चाहे सूर्य तेज तपता था और पृथ्वी आग की भांति तपती थी, पर चींटी आराम न करती। वह तो समय का पालन करना जानती थी। वह प्रातः और सायं घूम-घूमकर अन्न इकट्ठा करती थी। परन्तु झींगुर महाराज के लिए इस समय का कोई मूल्य न था। वह दिन में सोता था। प्रातः और सायं बागों में जाकर फूलों पर मंडराता रहता था। रात को खाली हाथ घर लौट आता था। इस प्रकार गर्मियों का समय बीत गया। झींगुर ने जरा भी अनाज न बटोरा। अब बरसात का समय आया। चारों ओर पानी के सिवाय कुछ न था। चींटी आराम से घर में बैठी थी। उसने ठीक समय पर परिश्रम किया था। अब बिना किसी चिन्ता के घर में अनाज खाती थी। दूसरी ओर झींगुर महाराज भूखों मर रहे थे। उन्होंने समय पर अनाज नहीं बटोरा था। उन्हें समय का पालन करना न आता था। एक दिन तो

भूख के मारे झींगुर के प्राण निकलने लगे। उस समय चींटी को बहुत दया आयी। उसने झींगुर को कुछ दाने दिये। इनको खाकर झींगुर को होश आया। उसने चींटी से कहा–"बहन, तुम बहुत समझदार हो। तुमने समय पर अनाज इकट्ठा किया। इससे अपनी और मेरी जान बचा ली। आज से मैं भी सब काम समय पर करूंगा।"

समझने की बातें—समय का पालन करना एक सुनहरा नियम है। हमें सब काम समय पर करने चाहिएं। यदि हमें प्रातः उठने की आदत न हो तो घड़ी को अलार्म लगा देना चाहिए। उसके बाद हमें सारे दिन के लिए कार्यक्रम बना लेना चाहिए। विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम इस प्रकार हो सकता है।

विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम—

प्रातः ५ बजे	जागना।
५ से ५॥ तक	शौच, दातुन आदि।
५॥ से ६॥ तक	सैर, खेल आदि।
६॥ से ७ तक	नहाना-धोना आदि।
७ से ७॥ तक	जलपान (नाश्ता)।
८ बजे या निश्चित समय पर	विद्यालय जाना।
१२ या १ तक	भोजन।
१ से २ तक	विश्राम।
२ से ४ तक	पढ़ना।
४ से ५ तक	जलपान।
५ से ६॥ तक	खेलकूद।
६॥ से ७ तक	भोजन।
७ से ८ तक	टहलना या सैर।
८ से ९ तक	लायब्रेरी की नैतिक शिक्षा की अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ना।
९ बजे	सोना।

लाभ—समय का पालन करने से अनेक लाभ हैं। जो विद्यार्थी समय पर पढ़ते-लिखते हैं वे परीक्षा में अच्छे अंक लेते हैं। जो किसान समय पर बीज बोता है, खेतों में पानी देता है, वही बोरियां भरके अनाज प्राप्त करता है। जो यात्री समय पर स्टेशन पर पहुंच जाएं उन्हें गाड़ी में सीट मिलती है, दूसरों को नहीं। यदि रोगी समय पर बीमारी का इलाज करवा ले तो वह ठीक हो जाता है, समय के बाद इलाज करवाने से रोग बढ़ जाता है। इस प्रकार सब काम समय पर ही करने चाहिएं।

समय नष्ट करने से हानियां—जो लोग अपना समय नष्ट करते हैं वे पछताते हैं। सारा वर्ष यदि हम गप्पें मारते रहें तो परीक्षा के समय पछताना पड़ता है। रोगी को यदि समय पर डॉक्टर की सहायता न मिले तो उसकी मृत्यु भी हो सकती है। समय का पालन करना मजदूर, किसान, बच्चे, बूढ़े, मालिक या नौकर—सभी के लिए आवश्यक है। इनमें से यदि कोई भी समय का पालन करना नहीं जानता तो वह बहुत हानि उठाता है। सेना में समय-पालन करना और भी आवश्यक है। एक बार नैपोलियन युद्ध में इसलिए हारा था कि वह युद्धक्षेत्र में केवल पांच मिनट देर से पहुंचा था। इन्हीं पांच मिनटों में शत्रु-दल ने वहां पहुंचकर अपना अधिकार कर लिया था।

छात्रों के लिए समय-पालन का काम—आज से हम समय का पालन करेंगे। अपना समय-विभाग बनायेंगे। हम अपना प्रत्येक काम समय-विभाग के अनुसार करेंगे। हम समय पर जायेंगे, खायेंगे, पढ़ेंगे, खेलेंगे और मनोरंजन आदि करेंगे। समय पर पाठशाला जायेंगे। किसी धार्मिक स्थान या अन्य उत्सव पर भी ठीक समय पर जायेंगे। जो लोग समय के महत्त्व को जानते हैं, समय उनको महत्त्व देता है।

सदा प्रसन्न रहो

कहानी—रामचन्द्रजी के दो गुरु थे—विश्वामित्रजी और वशिष्ठजी। एक दिन विश्वामित्रजी ने वशिष्ठजी से पूछा—"वशिष्ठजी ! आपको राम का कौन-सा गुण सबसे अच्छा लगता है ?"

वशिष्ठजी ने कहा—"प्रसन्नता का गुण ! राम सदा फूल की तरह मुसकराता रहता है।"

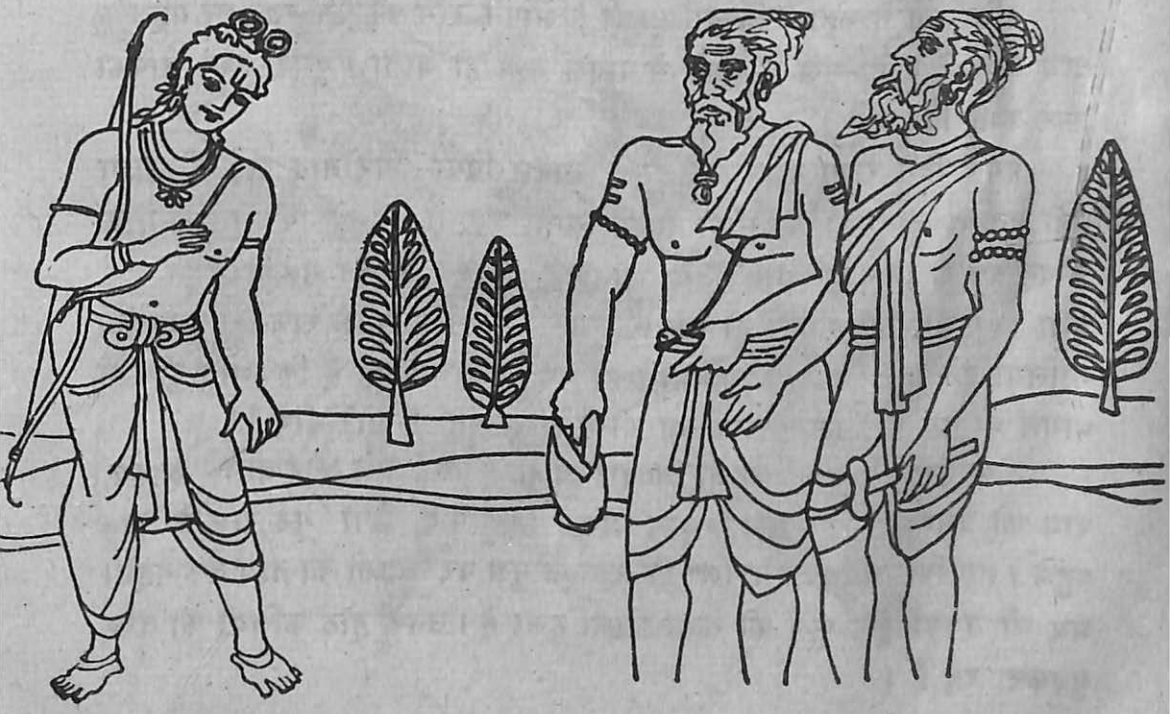

विश्वामित्रजी बोले–"आप हमें राम की प्रसन्नता दिखाइये।"

वशिष्ठजी ने कहा—"उचित समय पर मैं आपको दिखाऊंगा।"

कुछ दिनों के पश्चात् राजा दशरथ ने आदेश दिया—"मैं बूढ़ा हो गया हूं। अतः राम को राजा बनाया जाएगा।" यह सुनकर सब प्रसन्न हुए। कुछ लोग नाचने लगे। कुछ गाने लगे। कुछ तालियां बजाने लगे। कुछ जोर जोर से हंसने लगे–हा-हा ! हा-हा ! मतलब यह है कि लोग खुशी में पागल हो रहे थे। किन्तु राम केवल मुसकरा रहे थे—धीरे-धीरे !

ठीक उसी समय वशिष्ठजी विश्वामित्रजी के पास गये और बोले—"आइये राम की प्रसन्नता देखिये।" फिर दोनों गुरु राम के पास पहुंचे। तब विश्वामित्रजी ने देखा की राम का मुख फूल की तरह खिला हुआ है। उनके होंठ कलियों की तरह हल्का हल्का मुसकरा रहे हैं।

वशिष्ठजी ने कहा–"विश्वामित्रजी ! आपने राम की प्रसन्नता का यह एक दृश्य देखा है। यह सुख में खुशी से पागल नहीं हो जाता। दूसरा दृश्य आपको फिर कभी दिखाएंगे।"

अगले दिन राजा दशरथ ने दूसरा आदेश दिया–"मेरे बाद राम को राजा नहीं बनाया जाएगा। भरत को राजा बनाया जाएगा। इसके विपरीत राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास दिया जाता है।" यह सुनकर सबको बहुत दुःख हुआ। कुछ लोग उदास हो गये। कुछ रोने लगे। कुछ राजा दशरथ को गालियां देने लगे। कुछ लोग बेहोश हो गए। मतलब यह है कि लोग दुःख में पागल हो गये थे। किन्तु राम तब भी मुसकरा रहे थे–धीरे-धीरे !

ठीक उसी समय वशिष्ठजी विश्वामित्रजी के पास पहुंचे और बोले–"आइये, राम की प्रसन्नता का दूसरा दृश्य देखिये !" फिर दोनों गुरु राम के पास पहुंचे। तब विश्वामित्रजी ने देखा कि राम के मुख पर उदासी का नाम तक नहीं। अब भी उनका मुख फूल की तरह खिला हुआ है। उनके होंठ कलियों की तरह मुसकरा रहे हैं।

वशिष्ठजी ने कहा–"विश्वामित्रजी ! राम की प्रसन्नता का यह दूसरा दृश्य है। जब दुःख में दूसरे लोग रोने और पीटने लगते हैं, तब भी राम व्याकुल नहीं होता। फिर भी वह मुसकराता रहता है। सुख में सभी हंसते-मुसकराते हैं किन्तु जो दुःख में भी मुसकरा सकता है उसी की प्रसन्नता सच्ची है।"

विद्यार्थियो ! तुम खूब सोचकर एक प्रश्न का उत्तर दो–"तुम हंसना पसन्द करते हो या रोना ?"

"हम हंसना पसन्द करते हैं।" सब विद्यार्थी यही उत्तर देंगे। दुनिया के सभी लोग यही चाहते हैं। प्रसन्नता सबको प्यारी है। किंतु क्या तुम जानते हो कि प्रसन्नता कैसे मिल सकती है ? इसके ये पांच उपाय हैं–

(क) मनपसन्द काम होने से प्रसन्नता होती है। विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहता है। जब वह उत्तीर्ण हो जाता है तो प्रसन्न होता है।

(ख) भले काम करने से प्रसन्नता होती है। तुम किसी दुःखी की सहायता करो तो तुम्हें बहुत प्रसन्नता होगी। इसके विपरीत यदि हम दूसरों का बुरा करें तो हम कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। यदि एक चोर किसी के रुपये चुरा ले तो क्या वह प्रसन्न होगा ? नहीं, वह दिल में डरता रहेगा तो उसे प्रसन्नता कहां होगी ! अतः भला काम वह होता है जिससे अपना भला हो और दूसरों का भी। अतः हमें भलाई के काम करने चाहिएं।

(ग) अच्छे स्वास्थ्य से प्रसन्नता होती है। अतः हमें रोगों से दूर रहने का यत्न करना चाहिए। साथ ही स्वास्थ्य सुधारने के लिए व्यायाम आदि करना चाहिए।

(घ) मनोरंजन से प्रनन्नता होती है। मनोरंजन के पांच साधन हैं–

(१) खेल-कूद। (२) कहानियों आदि की अच्छी पुस्तकें पढ़ना। (३) अच्छे स्थानों की यात्रा करना (४) अच्छे साथियों के साथ हंसी-विनोद करना (५) अच्छे सिनेमा देखना, अच्छे गाने सुनना तथा सरकस आदि देखना। हमें अपनी शक्ति के अनुसार मनोरंजन करना चाहिए।

मनोरंजन और खेल-कूद से दिल का भय भाग जाता है। चिंता मिटती है, जीवन में ताजगी और नयापन आता है। खुलकर हंसने से बनावटीपन दूर होता है और मनुष्य हंसमुख बनता है। हंसमुख मनुष्य सबको प्रिय लगता है। लोकप्रिय मनुष्य के मित्र अनगिनत होते हैं। जिसके मित्र अधिक हैं वह संसार में सुख पाता है। यदि हंसमुख व्यक्ति पर दुःख आते हैं तो वह उन्हें भी हंसते-हंसते सहन कर लेता है। इसलिए उसे दुःख अधिक नहीं सताते। खुश रहने वाला मनुष्य स्वस्थ रहता है और वह देर तक जवान रहता है। बुढ़ापा उसे अधिक नहीं रुलाता।

कई लोग समझते हैं कि धन से प्रसन्दता प्राप्त होती है। यह सोचना भूल है। जिसके पास जितना अधिक धन है वह उतना ही अधिक रोगी और दुःखी रहता है। वास्तव में सुख मन से मिलता है। जिसके मन में सन्तोष है वही प्रसन्न रहता है।

छात्रों के लिए प्रसन्नता के काम–

१. मैं प्रातः खुशी से जागूंगा और मुसकराते हुए सबको नमस्ते करूंगा।
२. मैं थोड़ी देर के लिए खेलने या सैर करने जाऊंगा।
३. मैं व्यायाम और स्नान करूंगा।
४. मैं ऐसा कोई कार्य नहीं करूंगा जिससे लोग मुझसे नाराज हों।
५. मैं घर में भाई-बहनों और मित्रों से खेलूंगा।
६. कहानियां आदि मनोरंजक पुस्तकें एवं समाचारपत्र पढ़ूंगा और रेडियो पर बच्चों का प्रोग्राम सुनूंगा।
७. मैं किसी से कड़वा न बोलूंगा। मैं सबसे खुशी और प्यार से मिलूंगा।

करो सेवा, मिले मेवा

राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्ण का भक्त था। एक बार युधिष्ठिर की बहुत बड़ी विजय हुई। इस खुशी में उसने बहुत बड़ा यज्ञ और उत्सव मनाने की तैयारी की। वह श्रीकृष्ण के पास पहुंचा और बोला–"महाराज! आजकल दुनिया में आप सबसे बड़े हैं। आप सबसे बलवान, विद्वान् और बुद्धिमान हैं। अतः यज्ञ में आपको सबसे ऊंचा पद मिलना चाहिए। आप स्वयं बताइये कि आप कौन सा काम पसन्द करेंगे?"

श्रीकृष्ण ने कहा–"सबसे बड़ा काम सेवा है। अतः मैं अतिथियों की सेवा का काम लेता हूं। मैं अतिथियों के चरण धोने का काम करूंगा।"

श्रीकृष्ण ने सचमुच अतिथियों के चरण धोये। सचमुच सेवा सबसे बड़ा काम है। सेवा का अर्थ है—दूसरों के दुःख दूर करके उन्हें सुख पहुंचाने के लिए छोटे से छोटा काम करने के लिए तैयार रहना। यह सेवा का एक रुप है। हमें भी दूसरों का दुःख दूर करने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।

श्री रामचन्द्रजी के युग में एक बहुत अच्छा लड़का था। उसका नाम था –श्रवणकुमार। उसके माता-पिता बूढ़े और अंधे थे। श्रवणकुमार उनकी बहुत सेवा करता था। वह उनके लिए रोटी पकाता, पानी लाता और उन्हें नहलाता-धुलाता था। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो उसके माता-पिता ने कहा– "बेटा! हमारी बहुत इच्छा है कि हम तीर्थयात्रा करें।"

ीवणकुमार ने एक बहंगी बनाई। उसके एक ओर उसने माता को बिठाया
ौर दूसरी ओर पिता को। फिर बहंगी को कंधे पर रखकर वह उन्हें तीर्थों
ी यात्रा करवाने लगा। एक दिन वह माता-पिता के लिए घड़े में पानी भरने
या। उधर उसी जंगल में राजा दशरथ शिकार खेलने आया हुआ था। घड़े
ी गड़-गड़ सुनकर राजा ने समझा कि कोई जंगली जन्तु पानी पी रहा है।
ाजा ने बाण चला दिया। बाण लगने से श्रवणकुमार मर गया। माता-पिता
ी सेवा करते हुए उसने प्राण तक दे दिए।

यह सेवा का दूसरा रूप है। हमें भी अपने माता-पिता और गुरुजनों की
वा करनी चाहिए।

सुभाषचन्द्र बोस एक योग्य विद्यार्थी थे। उन दिनों भारत स्वतन्त्र नहीं
ा। तब यहां अंग्रेजों का राज्य था। एक दिन अंग्रेज अध्यापक ने भारत को
ला-बुरा कहा। सुभाषचन्द्र अपने देश की बुराई न सह सके। उन्होंने सबके
ामने उस अंग्रेज की बात को गलत सिद्ध कर दिया।

बड़े होकर सुभाष बाबू चाहते तो बहुत बड़े अफसर बन सकते थे। परन्तु
उन्होंने धन कमाया और न अपना घर बसाया। उन्होंने देश की सेवा करने
का निश्चय किया। वे देश को अंग्रेजों से स्वतन्त्र करवाने का यत्न करने लगे। वे
जनता को इकट्ठा करके सरकार के अत्याचारों का विरोध करते थे। अंग्रेजों ने
चिढ़कर उन्हें जेल में कैद कर दिया। सुभाष बाबू साधु का वेश बनाकर जेल से
भी भाग गए। भारत से बाहर जाकर उन्होंने 'आजाद हिंद फौज' बनाई। फिर
उन्होंने अंग्रेजों से युद्ध किया। कहते हैं कि युद्ध करते-करते वे शहीद हो गए।
इस प्रकार वे देश-सेवा करते हुए जिये और देश-सेवा करते हुए मरे।

सेवा का यह तीसरा रूप है। हमें भी सुभाष बाबू की तरह देश-सेवा
करनी चाहिए।

बालको ! इस प्रकार सेवा तीन प्रकार की होती है–

(१) लोगों की सेवा, (२) माता-पिता और गुरुजनों की सेवा,

(३) देश की सेवा। हमें तीनों प्रकार की सेवा करने के लिए सदा तैयार रहन चाहिए।

विद्यार्थियो ! बहुत से छात्र छुट्टियों के दिन व्यर्थ बिता देते हैं। इ दिनों में आप समाज-सेवा के अनेक काम कर सकते हैं। पिछले दिनों कु विद्यार्थियों ने सेवा के अच्छे उदाहरण उपस्थित किए। कई गांवों में सड़क नहीं थीं। विद्यार्थियों ने अपने श्रम से अठारह मील लम्बी कच्ची सड़क बनाई।

कुछ गांवों में वर्षा का पानी बेकार ही बह जाता था। किसी काम आता था। विद्यार्थियों ने उस पानी के लिए एक बांध बना दिया। इससे एक हजार एकड़ भूमि में सिंचाई होने लगी। कई गांवों में जोहड़ गन्दे पड़े थे विद्यार्थियों ने उन्हें साफ किया। उन्होंने कई कुओं की भी सफाई की। उन्होंने एक गांव में नया विद्यालय बनाने के लिए भूमि को समतल बनाया। वे छात्र मिलकर गाया करते थे—

सेवा ही हमारा धर्म है।
सेवा ही हमारा कर्म है।
सेवा ही है सच्ची पूजा–
इससे अच्छा काम नहीं दूजा।

छात्रों के लिए सेवा के काम–(१) हम सभा में, उत्सवों में, सतसंग या अतिथियों के आने पर लोगों को पानी पिलाने की सेवा करेंगे। (२) ह बीमारी में अपने मिलने वाले, बहन-भाइयों और माता-पिता आदि के लि डॉक्टर से दवाई लाएंगे। उनके लिए चाय बनाएंगे। दर्द में उनका सि सहलाएंगे, टांगें दबाएंगे। (३)हम गुरुजनों के लिए कुर्सी या आसन लाएंगे (४) माता-पिता थके हों तो हम उनके लिए बिस्तर बिछाएंगे।

दीन-दुखियों पर दया

एक बालक था। वह दीनबन्दु के नाम से प्रसिद्ध था। एक दिन वह कहीं आ रहा था। मार्ग में उसे एक पेड़ की झुकी हुई शाखा दिखाई दी। वहां घोंसले में दो अण्डे रखे थे। पास ही एक चिड़िया बैठी थी। बालक को अण्डे अच्छे लगे। वह अण्डों की ओर बढ़ा तो चिडिया ने शोर मचाया—-चीं-चीं! बालक ने चिड़िया के रोने की चिन्ता न की। उसने अण्डे ाकर जेब में रख लिए और लौट पड़ा।

घर आकर दीनबन्धु ने वे अण्डे अपनी माता को दिखाये। उसने सोचा था, ताजी खुश होंगी। किन्तु वह बोली—बेटा! तूने यह बुरा किया है। बेचारी ड़िया इन्हें ढूंढ़ रही होगी और रोती होगी। जा, इन्हें जहां से लाया है वहीं कर रख आ। यह सुनकर दीनबन्धु उन अण्डों को वहीं ले गया जहां चिड़िया ी चिड़-चिड़ रो रही थी। उसका रोना सुनकर बालक का हृदय दया से भर या। उसने वे अण्डे वहीं रख दिए और प्रतिज्ञा की कि अब मैं किसी का दिल दुखाऊंगा। सचमुच उस बालक ने बड़े होकर जीवन भर लोगों की सेवा की। भारत में दीनबन्धु एंड्रयूज के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विद्यार्थियो, इस प्रकार दया एक बहुत अच्छा गुण है। जब हम किसी को ी देखते हैं तो हमारे दिल में भी दुःख होता है। हम उसी की सहायता करते हैं र प्यार करते हैं। इसी को दया कहते हैं। अपने से छोटों और दुखियों के थ दया का व्यवहार करना चाहिए। दुनिया में सबको दया कि आवश्यकता

84221

राजा इन्द्र ने हठ किया—"देर न कीजिए। मुझे भूख लगी है। मेरा शिकार छोड़ दीजिए मैं उसका मांस खाऊंगा।"

राजा शिवि ने दूसरा रास्ता न देखकर कहा—"यदि आप मांस ही खाना चाहते हैं तो कबूतर के बदले मेरा मांस खा लीजिए।" शिवि की परीक्षा लेने के लिए राजा इन्द्र ने यह बात मान ली। शिवि सचमुच अपना मांस काटकर देने लगे। यह देखकर राजा इन्द्र ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, "राजा शिवि! मैं आपकी दया से बहुत प्रसन्न हूं। आपको वर देता हूं कि आपका नाम संसार में अमर रहेगा।"

दया के कारण आज भी राजा शिवि की कहानी संसार में प्रसिद्ध है।

छात्रों के लिए दया के काम

१. हम तितलियां, कबूतर, चिड़ियां, कुत्ते, बिल्ली के बच्चे नहीं पकड़ेंगे। यदि कोई उन्हें सता रहा हो तो हम उससे इन्हें बचाने के लिए यत्न करेंगे।

२. हम यत्न करेंगे कि कीड़े-मकोड़े हमारे पैरों तले न कुचले जायें।

३. कई बार आंधी या वर्षा से पक्षियों के बच्चे घोंसलों से गिरकर घायल हो जाते हैं। कई बार चिड़ियां-कबूतर बिजली के पंखे से टकराकर चोट खा जाते हैं। ऐसी दशा में हम उन्हें उठाकर पानी पिलाएंगे और उन्हें सुरक्षित रखेंगे।

४. हम पैसे बचाकर घायलों और रोगियों की सहायता के लिए रेडक्रॉस में चन्दा देंगे।

महान् गुण—स्वच्छता

स्वच्छता का अर्थ—स्वच्छता का मतलब है सफाई। हमारा शरीर और मन दोनों साफ होने चाहिएं, क्योंकि सन्तों का कहना है कि ईश्वर के बाद स्वच्छता का नाम है। जिसका तन और मन भी साफ है वह ईश्वर के पास है।

कहानी—दो भाई थे—नवीन और प्रवीण। दोनों के घर एक-जैसे थे। दोनों की दीवारें मिलती थीं। एक बार दीवाली आयी। दोनों ने एक-जैसे घर संवारे और सजाए। दोनों के घर एक-जैसे साफ और चमकीले दिखाई दे रहे थे।

अचानक नवीन की नजर प्रवीण के घर पर पड़ी। उसकी एक दीवार पर कोयले के धब्बे रह गये थे। नवीन ने सोचा—दीवाली के दिन मेरे भाई के घर में एक धब्बा क्यों दिखाई दे? यह सोचकर नवीन ने अपने हाथों से प्रवीण की दीवार को पोतकर चमका दिया।

उधर प्रवीण का व्यवहार इससे बिलकुल उल्टा था। उसने देखा कि जैसे उसका अपना घर चमक रहा है वैसे ही नवीन का भी चमक रहा है। वह सोचने लगा, दीवाली के दिन हमारा घर बढ़िया होना चाहिए। नवीन के घर में कोई न कोई दोष अवश्य दिखाई देना चाहिए। यह सोचकर प्रवीण ने नवीन के घर की दीवार पर काले धब्बे लगा दिये।

सांयकाल को दोनों घरों में एक-जैसे दीपक जले। दोनों घर एक-जैसे खूब चमक रहे थे। तभी दीवाली की देवी लक्ष्मीजी लोगों की सफाई-सजावट देखने के लिए निकलीं; धन-देवता कुबेरजी भी उनके साथ थे। वे देखते-परखते हुए नवीन और प्रवीण के घर में भी आए। धरती पर ये दोनों घर सबसे अधिक

साफ-सुथरे थे। अब प्रश्न यह था कि इन दोनों में से किसे सफाई का पुरस्कार दिया जाए। दोनों घर लगभग एक-जैसे थे। लक्ष्मीजी ने ध्यान से देखा तो नवीन के घर पर कुछ काले धब्बे दिखाई दिये। फिर भी उन्होंने उसी के घर को पुरस्कार के लिए चुना।

यह देखकर कुबेरजी ने विरोध किया—लक्ष्मीजी ! वैसे तो दोनों घर एक-जैसे साफ-सुथरे हैं। पर नवीन के घर पर कुछ काले धब्बे हैं प्रवीण के घर पर एक भी धब्बा नहीं है। फिर भी आप नवीन को पुरस्कार देना चाहती हैं ?

लक्ष्मीजी पहले कुछ मुसकराईं, फिर बोलीं—कुबेरजी ! मैं घर की सफाई भी देखती हूं और दिल की सफाई भी। यदि नवीन के घर पर कुछ धब्बे हैं तो प्रवीण के दिल पर कुछ धब्बे हैं। वह अपने सगे भाई की उन्नति देखकर जलता है इसलिए उसका दिल साफ नहीं, काला है। उसकी तुलना में नवीन का दिल बिलकुल साफ है और घर भी साफ है। दीवाली पर जो दो-चार धब्बे हैं वे उसके भाई ने लगाये हैं। इसलिए बाहर और भीतर की सबसे अधिक सफाई नवीन के घर में दिखाई दी है, अतः सफाई का पुरस्कार उसी को मिलना चाहिए। कुबेरजी को यह बात पसन्द आयी। कहते हैं उस दिन से नवीन के घर पर लक्ष्मीजी की कृपा हो गयी। तब से वह घर फलने-फूलने लगा।

स्वच्छता के लाभ—स्वच्छ रहने के अनेक लाभ हैं। इससे शरीर का मैल दूर होता है। मैल दूर होने से मनुष्य का स्वास्थ्य सुधरता है। स्वस्थ रहने से मनुष्य सुन्दर और आर्कषक बनता है। इससे उसकी उदासी दूर होती है और वह प्रसन्न रहता है। सुन्दर और प्रसन्न मनुष्य सबको अच्छा लगता है। जो सबको अच्छा लगता है उसको सब कामों में सफलता मिलती है। जिसका जीवन सफल है वही संसार में सबसे सुखी है।

स्वच्छता न रखने से तन और मन में मैल भरा रहता है। शरीर मैला रहने से मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ता है और उसे अनेक रोग आ घेरते हैं। रोगी मनुष्य सदा दुःख पाता है। मन मैला रहने से उसमें पाप और उदासी भर जाती है।

पापी मनुष्य सदा बुरी बात सोचता और दूसरों को देखकर जलता रहता है।

अतः विद्यर्थियो ! हमें चाहिए कि हम बाहर और भीतर की पूरी सफाई रखें। बाहरी सफाई के लिए हमें नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिए–

१. हम अपने दांत, नाक, कान को साफ रखें।

२. हम प्रतिदिन स्नान करके उजले वस्त्र पहनें।

३. हम गन्दी जगह या गन्दे बालकों के साथ न खेलें-कूदें।

४. हम छिलके, कागज, जूठन आदि इधर-उधर फेंककर गंद न फैलाएं।

५. हम खोमचेवालों से ऊट-पटांग को चीजें न खायें। रूखे फल और मिठाइयां भी न लें जिन पर मक्खियां भिनभिनाती हैं।

६. हम खाने-पीने, उठने-बैठने और रहन-सहन की गन्दी आदतें छोड़ दें। हम हर बात में सफाई का ध्यान रखें।

बालको ! भीतरी सफाई के लिए हमें केवल एक बात का ध्यान रखना चाहिए—हम किसी का बुरा न सोचें।

छात्रों के लिए स्वच्छता के काम–

(क) हम प्रातः शौच जाने की आदत डालेंगे।

(ख) हम जागते और सोते समय हाथ-मुंह और दांत साफ किया करेंगे।

(ग) हम प्रातः स्नान करके साफ कपड़े पहनेंगे।

(घ) हम अपनी पुस्तकें, कॉपियां और बस्ता साफ रखेंगे। उन पर स्याही के धब्बे न लगने देंगे।

(ङ) हम रद्दी कागज और छिलके आदि कूड़ेदान में डालेंगे।

(च) हम फर्श पर, बस में और सड़क पर नहीं थूकेंगे।

एकता में बल

कहानी—एक बूढ़ा था। उसके तीन पुत्र थे। उनमें एकता न थी। वे कोई भी काम मिलकर न कर सकते थे। इससे उलटे वे आपस में लड़ते थे।

बूढ़े पिता ने समझाने का उपाय सोचा। एक दिन उसने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा—"तुम बीस लकड़ियों का एक गट्ठर बांधकर ले आओ।" लड़के गट्ठर ले आये। पिता ने कहा—"इस बंधे गट्ठर को तोड़ो।" सबने जोर लगाया पर गट्ठर न टूटा। अब पिता ने कहा—"गट्ठर को खोलकर एक-एक लकड़ी को अलग-अलग करके तोड़ो।" लड़कों ने एक-एक लकड़ी को सरलता से तोड़ दिया।

अब पिता ने पुत्रों को समझाया—"जब तक ये लकड़ियां इकट्ठी बंधी हुई थीं तब तक तुममें से कोई भी इन्हें नहीं तोड़ सका। किन्तु जब ये लकड़ियां अलग-अलग हो गयीं तो तुमने टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार यदि तुम गट्ठर की तरह मिलकर रहोगे तो तुम्हें कोई हानि न पहुंचा सकेगा; किंतु यदि तुम एक-एक लकड़ी की तरह अलग-अलग होकर लड़ोगे तो हर कोई तुम्हें मार लेगा। इसलिए आपस में मिलकर रहा करो।" तब से वे लड़के एकता से रहने लगे।

एकता का अर्थ—विद्यार्थियो! एकता का अर्थ है एक साथ मिलकर काम करना। एक आदमी अकेला होता है। उसमें बल भी कम होता है। बहुत आदमियों में बल अधिक होता है। एक मनुष्य एक ही जगह पर काम कर सकता है। अनेक मनुष्य एक ही समय में अनेक स्थानों पर आ-जा सकते हैं। छोटे-छोटे

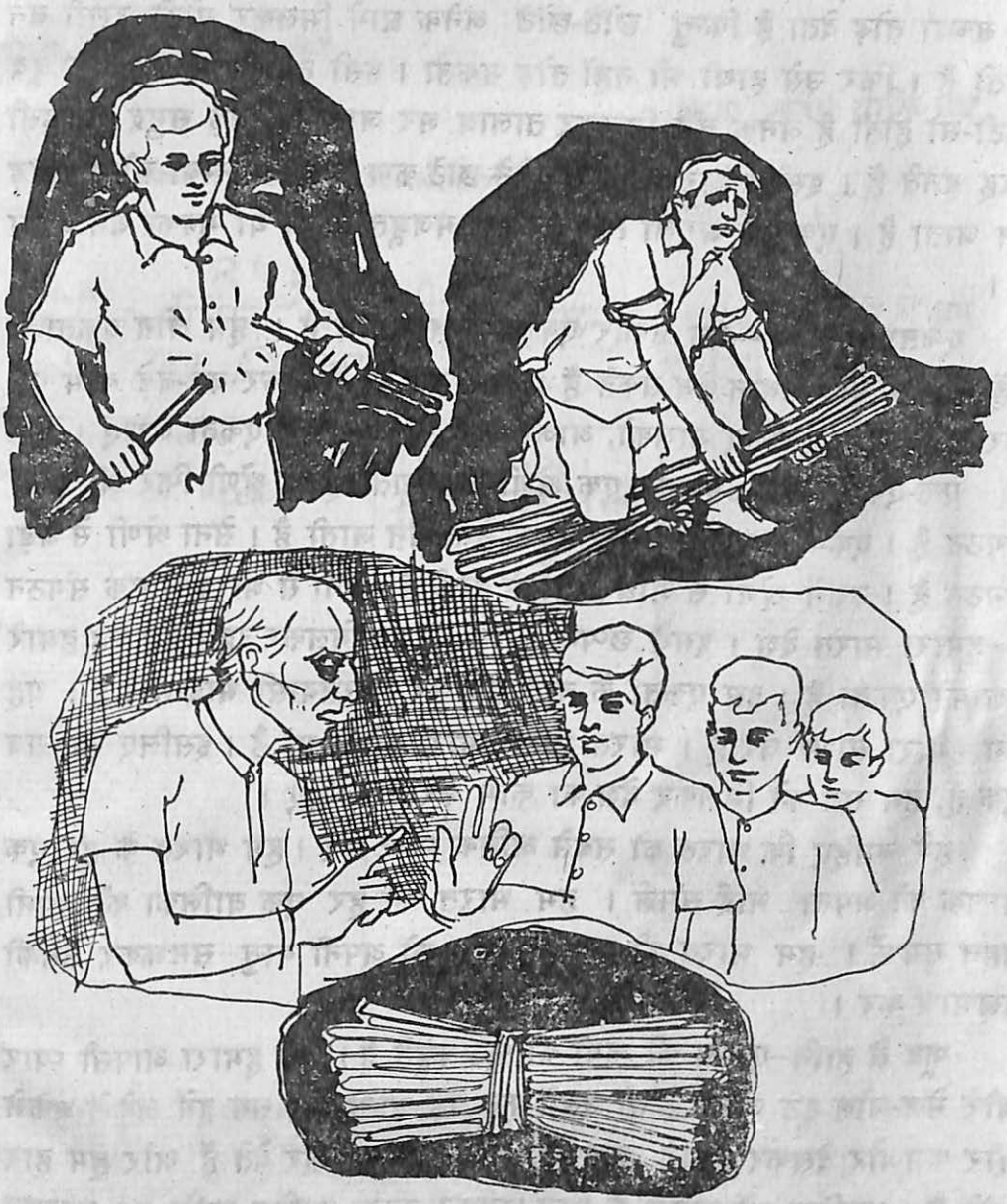

अनेक व्यक्ति मिलकर बहुत बलवान बन जाते हैं। छोटे-से एक धागे को नन्हा-सा बच्चा तोड़ देता है किन्तु छोटे-छोटे अनेक धागे मिलकर मोटी रस्सी बन जाती है। फिर उसे हाथी भी नहीं तोड़ सकता। इसी तरह पानी की एक बूंद छोटी-सी होती है अनेक बूंदें मिलकर तालाब भर जाता है। बड़े समुद्र भी इसी तरह बनते हैं। इसी प्रकार मिट्टी के छोटे-छोटे कण मिलकर लम्बा-चौड़ा पहाड़ बन जाता है। एक-एक अंगुली मिलकर एक मजबूत मुट्ठी या मुक्का बन जाता है।

एकता के लाभ—इस प्रकार एकता में बड़ा बल है। हम लोग एकता से रहें तो हम भी बलवान बन सकते हैं। फिर हम भी मिलकर बड़े-बड़े काम पूरे कर सकते हैं। इसलिए बालको, आओ, हम भी आपस में एकता बढाएं।

एक-एक बालक मिलकर एक श्रेणी बन जाती है। श्रेणी फिर भी छोटा संगठन है। एक-एक जवान मिलकर एक सेना बन जाती है। सेना श्रेणी से बड़ा संगठन है। उसमें श्रेणी से अधिक शक्ति होती है। सेना से भी बड़ा एक संगठन है—हमारा भारत देश। इसमें छप्पन करोड़ मनुष्य मिलकर रहते हैं। यह हमारे देश की एकता है। इस एकता के नाते हम सब भारतवासी भाई-भाई हैं। यह देश हमारा सांझा घर है। भारत माता हमारी सांझी मां है। इसलिए हम सब एक हैं, हम सब को मिलकर देश का काम करना चाहिए।

हमें चाहिए कि भारत को सबसे अधिक प्यार करें। हम भारत के हर एक बालक को अपना भाई समझें। हम भारत की हर एक बालिका को अपनी बहन समझें। हम भारत की हर एक वस्तु को अपनी वस्तु समझकर उसकी देखभाल करें।

फूट से हानि—एकता की कमी को फूट कहते हैं। जब हमारा आपसी प्यार और मेल-जोल टूट जाता है तो उसमें फूट पड़ जाती है। तब हमें अकेले-अकेले और कमजोर देखकर हमारे शत्रु हम पर आक्रमण कर देते हैं और हम हार जाते हैं। इसलिए हमें आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए ताकि हम बलवान

आया करेंगे ताकि सब

काम करेंगे ।

करेंगे । छुट्टियों में हम

जाया करेंगे ।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
LIBRARY

Acc. No. 84225
Author धर्मपाल शास्त्री (सम्पादक)
Title नैतिक शिक्षा

Borrower's Name	Signature
Shri V.S. Rana	[illegible] 27/7/07

अनेक व्यक्ति मिलकर बहुत बलवान बन जाते हैं। छोटे-से एक धागे को नन्हा-सा बच्चा तोड़ देता है किन्तु छोटे-छोटे अनेक धागे मिलकर मोटी रस्सी बन जाती है। फिर उसे हाथी भी नहीं तोड़ सकता। इसी तरह पानी की एक बूंद छोटी-सी होती है अनेक बूंदें मिलकर तालाब भर जाता है। बड़े समुद्र भी इसी तरह बनते हैं। इसी प्रकार मिट्टी के छोटे-छोटे कण मिलकर लम्बा-चौड़ा पहाड़ बन जाता है। एक-एक अंगुली मिलकर एक मजबूत मुट्ठी या मुक्का बन जाता है।

एकता के लाभ—इस प्रकार एकता में बड़ा बल है। हम लोग एकता से रहें तो हम भी बलवान बन सकते हैं। फिर हम भी मिलकर बड़े-बड़े काम पूरे कर सकते हैं। इसलिए बालको, आओ, हम भी आपस में एकता बढाएं।

एक-एक बालक मिलकर एक श्रेणी बन जाती है। श्रेणी फिर भी छोटा संगठन है। एक-एक जवान मिलकर एक सेना बन जाती है। सेना श्रेणी से बड़ा संगठन है। उसमें श्रेणी से अधिक शक्ति होती है। सेना से भी बड़ा एक संगठन है—हमारा भारत देश। इसमें छप्पन करोड़ मनुष्य मिलकर रहते हैं। यह हमारे देश की एकता है। इस एकता के नाते हम सब भारतवासी भाई-भाई हैं। यह देश हमारा सांझा घर है। भारत माता हमारी सांझी मां है। इसलिए हम सब एक हैं, हम सब को मिलकर देश का काम करना चाहिए।

हमें चाहिए कि भारत को सबसे अधिक प्यार करें। हम भारत के हर एक बालक को अपना भाई समझें। हम भारत की हर एक बालिका को अपनी बहन समझें। हम भारत की हर एक वस्तु को अपनी वस्तु समझकर उसकी देखभाल करें।

फूट से हानि—एकता की कमी को फूट कहते हैं। जब हमारा आपसी प्यार और मेल-जोल टूट जाता है तो उसमें फूट पड़ जाती है। तब हमें अकेले-अकेले और कमजोर देखकर हमारे शत्रु हम पर आक्रमण कर देते हैं और हम हार जाते हैं। इसलिए हमें आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए ताकि हम बलवान

छात्रों के लिए एकता के काम

१. हम विद्यालय के लिए निश्चित वेश में पढ़ने आया करेंगे ताकि सब विद्यार्थी एक-जैसे दिखाई दें।

२. हम सब मानीटर के साथ मिलकर श्रेणी का काम करेंगे।

३. हम सब विद्यालय में फुलवाड़ी लगाएंगे।

४. हम विद्यालय में और पड़ोस में मिलकर खेला करेंगे। छुट्टियों में हम मिलकर पढ़ा करेंगे। प्रातः मिलकर सैर करने जाया करेंगे।

मैं मेहनत करूंगा

कहानी–एक कौआ था। एक दिन वह गर्मियों में उड़ रहा था। उड़ते-उड़ते उसे बहुत प्यास लगी। इधर देखा, उधर देखा। पर उसे कहीं पानी न मिला। वह उदास न हुआ। वह ढीला भी नहीं पड़ा। वह तो दुगनी मेहनत से पानी ढूंढने लगा। ढूंढते-ढूंढते उसे एक बरतन दिखाई दिया। उसने देखा तो बरतन के तले में थोड़ा-सा पानी था। कौए ने उसमें से पानी पीना चाहा पर उसकी चोंच पानी तक न पहुंची।

कौआ अब भी उदास न हुआ। अब भी वह ढीला न पड़ा, क्योंकि वह मेहनती था। वह एक-एक कंकर अपनी चोंच में उठाकर बरतन में डालने लगा। ज्यों-ज्यों कंकर पड़ते गए, पानी ऊपर उठता गया। धीरे-धीरे वह बरतन के गले तक पहुंच गया। अब कौए ने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई। यदि वह मेहनत न करता तो प्यासा मर जाता। इस प्रकार जो लड़का मेहनत करता है उसे सुख मिलता है। जो मेहनत नहीं करता वह दुःख पाता है।

श्रम का अर्थ–मेहनत को श्रम भी कहते हैं। श्रम दो तरह का होता है–शरीर का श्रम और मन-बुद्धि का श्रम। जो श्रम हाथ-पैर से करते हैं वह शरीर का श्रम कहलाता है। जैसे किसान श्रम से खेत में अन्न उगाता है। मजदूर श्रम से पत्थर तोड़ता है। बढ़ई श्रम से लकड़ी काटता-छीलता है। लुहार श्रम से लोहा काटता है। माली श्रम से क्यारियों में फूल लगाता है। ड्राइवर श्रम से मोटर चलाता है। इस प्रकार दुनिया के अधिक कार्य शरीर के श्रम से किए जाते हैं। यदि हम शारीरिक श्रम न करें तो न मकान बनें, न

विद्यालय के कमरे तैयार हों, न कपड़े बुने जाएं, न रोटी पके। अतः जहां शरीर के श्रम से काम बनता है वहां हमें हाथ-पैरों से खूब श्रम करना चाहिए।

दूसरा श्रम मन-बुद्धि का श्रम कहलाता है। मन से हम सोचते हैं। बुद्धि से हम समझते और याद करते हैं। यदि हम सोच-समझकर काम करें तो अच्छा फल मिलता है। यदि हम बिना सोचे काम करें तो बुरा फल मिलता है। कई लोग सोचने का श्रम नहीं करते। वे पीछे पछताते हैं। बुद्धि से समझने और याद करने का श्रम होता है। जैसे अध्यापक विद्यार्थियों को श्रम से पढ़ाते हैं। विद्यार्थी श्रम से पढ़ते हैं। लड़के श्रम से याद करते हैं। लेखक जब सोच-सोच-कर लिखता है तब वह बुद्धि का श्रम करता है। इस प्रकार संसार के बड़े और अच्छे कार्य सोच-समझकर किए जाते हैं।

श्रम के उदाहरण—हमें श्रम करना चींटी और चिड़िया से सीखना चाहिए। चींटी छोटी-सी होती है। वह अपने से बड़े दाने को उठा ले जाती है। यदि दाना उससे न उठाया जाय तो खींचकर ले जाती है। यदि एक चींटी से काम न बने तो दूसरी चींटियों को बुला लाती है। यदि दाना गिर जाय तो चींटी निराश नहीं होतीं। वह फिर नीचे उतरती है। वह फिर दाने को उठाकर ऊपर ले जाती है। वह तब तक रुकती नहीं जब तक कि थकती नहीं और जब तक दाने को अपने घर में नहीं ले जाती। इसी प्रकार चिड़िया भी एक-एक तिनके से अपना घोंसला बनाती है। हमें चींटी और चिड़िया से श्रम करना सीखना चाहिए।

श्रम के लाभ—श्रम के अनेक लाभ हैं। इससे हमें अनेक काम करने आ जाते हैं। श्रम से हमारा शरीर और मन बलवान बनता है। श्रम से शरीर फुर्तीला बनता है। इससे हमें अच्छा फल मिलता है और हमारा जीवन सुखी बनता है। श्रम से मन प्रसन्न होता है। मेहनती मनुष्य को सब लोग पसन्द करते हैं, अतः हम सबको श्रम करना चाहिए।

श्रम करने की आदत बचपन से ही डालनी चाहिए। छोटी आयु में जो

विद्यार्थी मेहनत से जी चुराते हैं वे कामचोर और आलसी बन जाते हैं। अपने हाथ से काम करने में उन्हें शर्म आती है। उनके अंग कमजोर और शरीर मोटा, ढीला और सुस्त बन जाता है।

इससे उलटा जो छात्र बचपन से ही मेहनती बनते हैं वे वीर, साहसी और सफल मनुष्य बनते हैं। कठिन काम को देखकर वे घबराते नहीं। वे चींटी की तरह काम में जुट जाते हैं और तभी चैन से बैठते हैं जब काम को पूरा कर लेते हैं। इसलिए हम सब छात्र श्रम करने का प्रण करते हैं।

छात्रों के लिए श्रम के काम

१. हम अपने घर में बेल-बूटे लगाएंगे। भूमि खोदेंगे। गमलों में फूल उगायेंगे, उन्हें पानी देंगे। हम विद्यालय के बगीचे में भी सब काम करेंगे।

२. हम अपने छोटे कपड़े आप धोएंगे, जैसे रूमाल, बनियान, तौलिया आदि। हम छोटे-छोटे बरतन भी आप मांजेंगे।

३. हम बस या साइकिल का उपयोग दूर जाने के लिए ही करेंगे। मीटर, दो मीटर मार्ग हो तो हम पैदल ही चलेंगे।

४. घर के काम-काज में हम माता-पिता, बहन-भाई का हाथ बटाएंगे, विशेषकर दीवाली की सफाई-सजावट में, त्योहारों पर, निमंत्रण पर या घर में किसी के रोगी होने पर। हम चाय भी बनाएंगे, दूध भी लायेंगे, पानी भी भरेंगे।

५. हम मेहनत से पढ़ेंगे। हम विद्यालय से मिला हुआ काम अपने-आप सोचकर लिखेंगे। हम रोज याद करेंगे।

क्या हमारे संगी-साथी अच्छे हैं ?

कहानी—एक वृक्ष पर तोतों का एक जोड़ा रहता था। तोतों के दो बच्चे । एक का नाम सोहन था, दूसरे का नाम मोहन था। बच्चे जब बड़े हुए तो अपने माता-पिता से अलग रहने लगे।

सोहन ने एक साधु की कुटिया के पास एक पेड़ पर घोंसला बनाया। वह धु की संगति से अच्छी-अच्छी बातें बोलना सीख गया। जब कोई बाहर से ता तो साधु उसे कहता था—"आइए जी, नमस्ते ! आसन पर बैठिये ! पानी जिये !" सोहन भी कहता—"आइए जी, नमस्ते ! आसन पर बैठिए ! पानी जिए !"

उधर सोहन के भाई मोहन ने एक नीम के पेड़ पर अपना घोंसला बनाया। ड़ के नीचे एक शराबी का घर था। शराबी को गालियां देने की आदत थी। ब कोई उसके पास आता तो वह कहता—"अरे चांडाल ! यहां क्यों आया ? निकल यहां से, नहीं तो मैं तुझे जूते लगाऊंगा।" शराबी की संगति से ोहन भी कहना सीख गया—"अरे चांडाल ! यहां क्यों आया है ? निकल यहां , नहीं तो मैं तुझे जूते लगाऊंगा।"

एक दिन एक शिकारी आया। वह सोहन और मोहन दोनों को पकड़कर गया। उसने दोनों को एक पिंजरे में बन्द करके बेच दिया। सोहन को एक यापारी ने खरीदा। जब घर या बाहर का कोई भी आदमी आता तो सोहन हता—"आइये जी, नमस्ते ! आसन पर बैठिए ! पानी पीजिये !" सोहन की बातें सुनकर लोग चूरी और मीठे फल देते थे।

उधर मोहन को एक सिपाही ने खरीदा। जब घर या बाहर का को आदमी उसके पास आता तो मोहन कहता–"अरे चांडाल ! यहां क्यों आय है ? निकल यहां से, नहीं तो मैं तुझे जूते लगाऊंगा।" उसकी ये बातें सुनक सिपाही को बड़ा क्रोध आया। उसने बंदूक से मोहन को मार दिया।

सोहन और मोहन एक ही मां-बाप के बच्चे थे। किन्तु दोनों की संग अलग-अलग थी। साधु की संगति से मोहन अच्छी बातें सीख गया। अतः उ पुरस्कार मिलता था। बुरे मनुष्य की संगति से मोहन बुरी बाते सीख गया अतः वह मारा गया। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम सदा अच्छे लो की संगति करें। बुरे लोगों से हम दूर रहें।

सत्संगति–अच्छे लोगों के संग को सत्संग, सत्संगति कहते हैं। अच्छे ल वे नहीं होते जो चमकीले कपड़े पहनते हैं या जो ऊंचे घरों में रहते हैं। अ लोग वे हैं जिनमें गुण अच्छे हैं, जिनका स्वभाव अच्छा है, जिनकी आदतें अच हैं। दुनिया में अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी। अतः हमें अच्छे और बुरे पहचान होनी चाहिए।

अच्छे बालकों की पहचान–बालकों को चाहिए कि वे अपने साथी बन से पहले लड़कों के गुण और दोष अवश्य देख लें। अच्छे लड़कों के गुण ये वे साफ रहते हैं। साफ वस्त्र पहनते हैं। सत्य बोलते हैं। वे हंसमुख रहते है सबको 'जी' और 'आप' कहकर पुकारते हैं। वे किसी से लड़ते नहीं। वे सम पर सब काम करते हैं। मेहनत में किसी से पीछे नहीं रहते। सबको अप भाई समझते हैं। वे मीठा बोलते हैं और मीठा व्यवहार करते हैं। वे दूसरों सहायता करते हैं, बड़ों की आज्ञा मानते हैं। वे ईमानदार होते हैं। वे अनुशास में रहते हैं। ऐसे बालकों को अपना साथी बनाना चाहिए।

बुरे बालकों की पहचान–जो इनसे उलटे काम करते हैं वे बुरे बालक है वे गन्दे रहते हैं या बहुत फैशन करते हैं। वे गन्दे शब्द बोलते हैं। गालियां बक हैं। सिगरेट पीते हैं। पैसे चुराते हैं। जुआ खेलते हैं। झूठ बोलते हैं। विद्याल

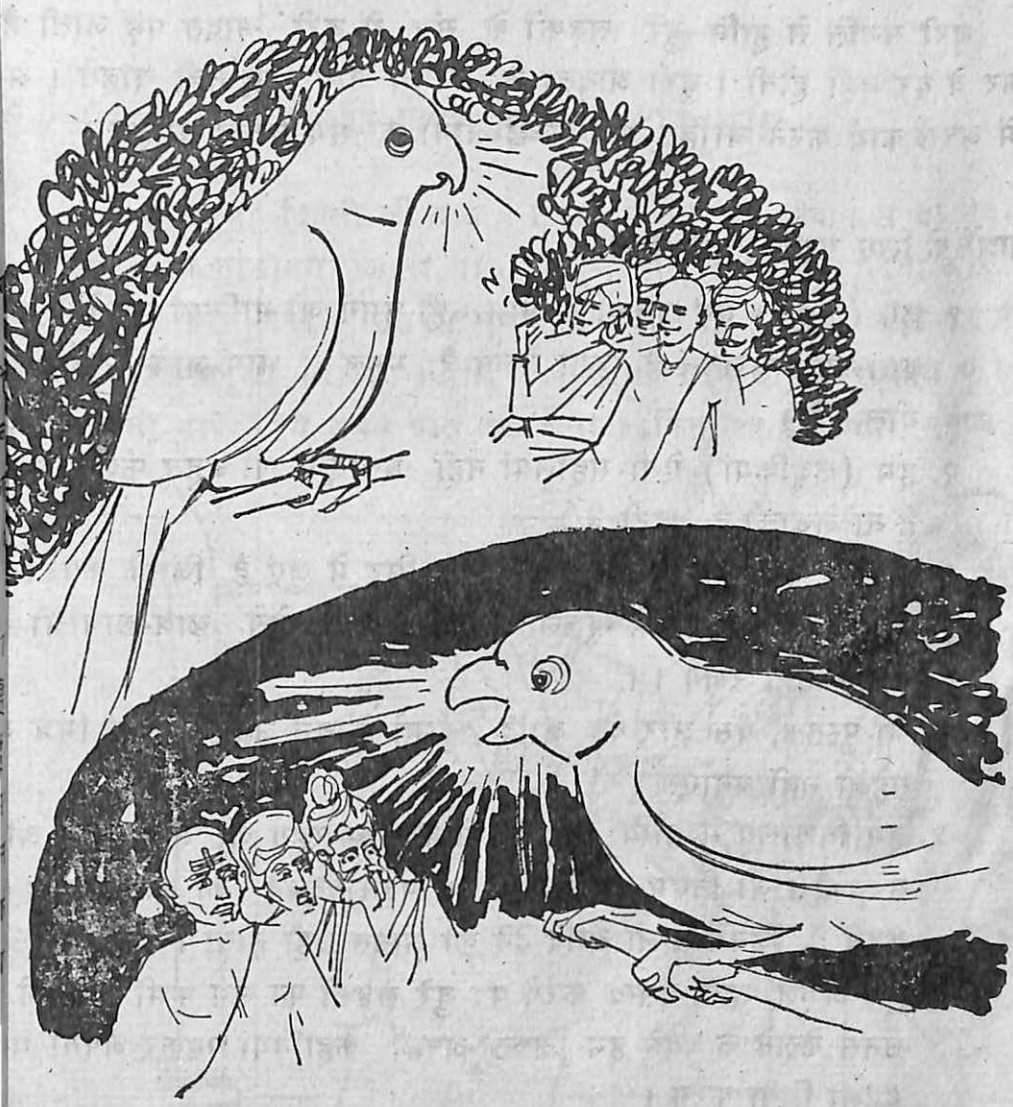

से भाग जाते हैं। वे बड़ों का कहना नहीं मानते। वे बात-बात पर लड़ झगड़ा करते हैं। ऐसे बालकों का संग नहीं करना चाहिए।

बुरी संगति से हानि—बुरे लड़कों के संग से बुरी आदत पड़ जाती फिर वे दूर नहीं होतीं। बुरी आदतों के कारण लोग उन्हें नहीं चाहते। हमें अच्छे कार्य करने चाहिएं और अच्छे लोगों का संग करना चाहिए।

छात्रों के लिए सत्संगति के काम

१. हम (लड़के) ऐसे लड़कों के साथ नहीं घूमेंगे जो गालियां बकते हैं बात-बात में लड़ते हैं, जुआ खेलते हैं, स्कूल से भाग जाते हैं और बोलते हैं।

२. हम (लड़कियां) ऐसी सहेलियां नहीं बनाएंगी जो बहुत फैशन क हैं या लड़ाकी हैं, झूठी हैं।

३. जिनकी नाक बहती रहती हैं, जिनके सिर में जुएं हैं, जिनके कपड़े बदबू आती है, जिन्हें खुजली रहती है—हम ऐसे छात्र-छात्राओं सम्पर्क नहीं रखेंगे।।

४. जो पुस्तकें, पैसे और पैन आदि चुराते हैं—हम उनको अपना मित्र सहेली नहीं बनाएंगे।

५. हम विद्यालय में योग्य विद्यार्थियों के साथ रहेंगे जो साफ-सुथरे सच्चे हैं। जो नियम पालते हैं। जो पढ़ने-लिखने का काम नियम करते हैं, जिनमें गाली आदि देने की आदत नहीं होती।

६. हम अकेले रहना पसन्द करेंगे पर बुरे लड़कों का संग कभी न करें उनसे खेलने के बदले हम अच्छी-अच्छी कहानियां पढकर अपना बहला लिया करेंगे।

मैं ईमानदार बनूंगा

सच्ची घटना—दिल्ली की बात है। राजू के तांगे पर स्टेशन से दो सवारियां बैठीं। उनको गांधीनगर जाना था। राजू ने उन्हें वहां उतार दिया और अपने घर भोजन करने गया। उतरते समय उसकी नजर पिछली सीट पर पड़ी। उस पर एक बटुआ पड़ा था। राजू ने देखा तो उसमें दो हजार रुपये थे। राजू चाहता तो सारे रुपये अपने पास रख लेता। किंतु वह ईमानदार मनुष्य था।

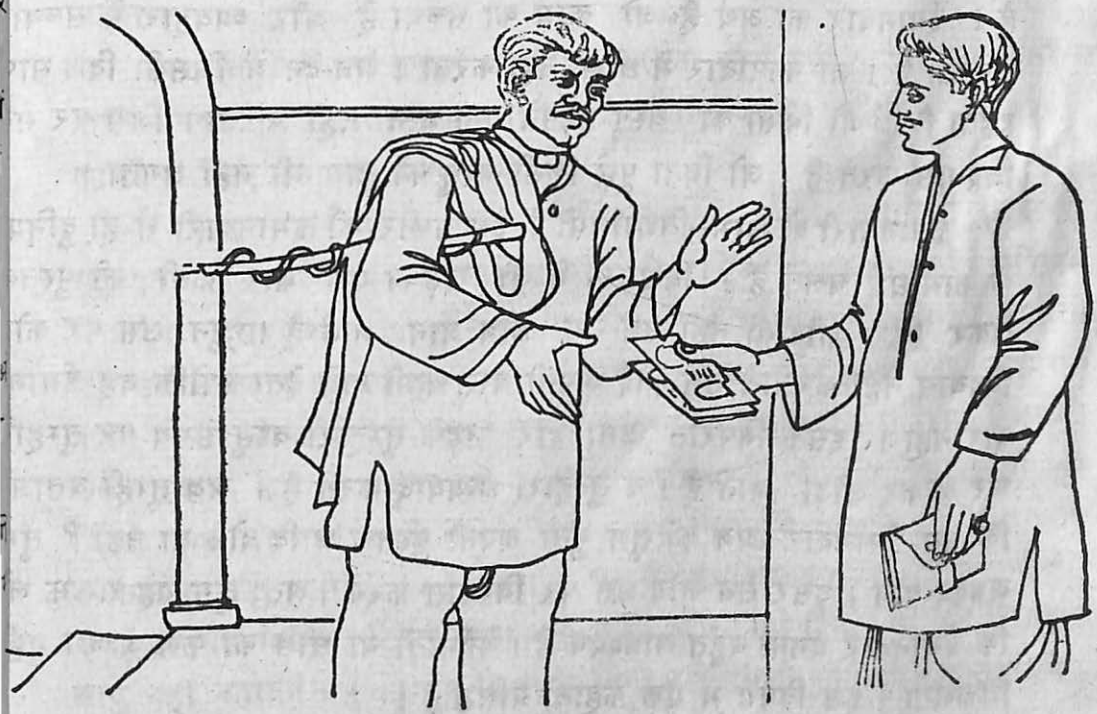

अतः उसने रोटी खाने से पहले ही तांगे में छूटे हुए रुपये उनके असली स्वा को देने का निश्चय किया।

संयोग से उस बटुए में एक पोस्टकार्ड भी पड़ा हुआ था। उस पर उ व्यक्ति का पता लिखा हुआ था। राजू ने मकान ढूंढ़कर अपनी सवारी पहचानते हुए कहा—"बाबूजी! लीजिए आपका यह बटुआ तांगे में रह गया थ देख लीजिए—सब वस्तुएं ठीक हैं न।" बाबूजी ने देखा, सब-कुछ ठीक था। देखकर राजू लौट पड़ा। बाबूजी ने एक सौ रुपये उसकी ओर बढ़ा दिये अ लपककर कहा—"भैया! यह तुम्हारी ईमानदारी का इनाम है।" किंतु राजू वे रुपये लेने से इनकार कर दिया और कहा—"बाबूजी, यह तो मेरा कर्त्त है कि आपकी छूटी हुई वस्तु आपके पास पहुंचाता।"

इमानदारी क्या है ?—विद्यार्थियो! यह एक ईमानदार तांगेवाले की कह है। ईमानदार का अर्थ है—जो काम का सच्चा है और व्यवहार में सच्च बरतता है। जो कारोबार में धोखा नहीं करता। लेन-देन में जिसका दिल स रहता है। जो किसी की वस्तु हड़पने का यत्न नहीं करता। जिस पर विश्वास करते हैं। जो बिना पूछे किसी वस्तु को हाथ भी नहीं लगता।

ईमानदारी के लाभ—विद्यार्थियो! इस प्रकार की इमानदारी से ही दुनि के काम-धंधे चलते हैं। विद्यालय में जो लड़का एक बार किसी की पुस्त लेकर फिर लौटाता नहीं उसे सब छात्र जान जाते हैं। पुनः उस पर क विश्वास नहीं करता। उसे कोई अपनी वस्तु कभी नही देता क्योंकि वह ईम दार नहीं। इसके विपरीत ईमानदार लड़के तुम्हारी वस्तु समय पर तुम्ह घर आकर लौटा जाते हैं। वे तुम्हारा धन्यवाद करते है। अब तुम्हीं बता कि उस ईमानदार छात्र को तुम पुनः अपनी पुस्तक आदि दोगे या नहीं ? त अवश्य दोगे। दूसरे सब लोग उस पर विश्वास करेंगे। अतः तुम यह समझ कि ईमानदार बनना बहुत आवश्यक है। बेईमानी या धोखे का फल अच्छा न निकलता। इस विषय में एक कहानी प्रसिद्ध है।

बेईमान की कहानी—एक दूधिया था। वह दूध में आधा पानी मिला कर बेचता था। एक बार ग्राहकों से दूध के रुपये बटोरकर वह घर लौट रहा था। रास्ते में वह कपड़े उतारकर एक नदी में नहाने लगा। उधर से एक बन्दर आया। उसने दूधिया के रुपये की पोटली उठा ली। वह एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ गया। फिर बन्दर पोटली में से रुपये निकाल-निकालकर फेंकने लगा। वह एक रुपया नदी के पानी में फेंकता था, दूसरा रुपया दूधिये के कपड़ों पर फेंकता था। इस प्रकार उसने आधे रुपये पानी में फेंक दिये, बाकी आधे रुपये दूधिये के पास पहुंच गए। दूधिया समझ गया कि बन्दर ने ठीक न्याय किया है। मैं दूध में आधा पानी मिलाता था अतः उसने आधे रुपये पानी में फेंक दिये। मेरा आधा दूध शुद्ध होता था अतः आधे रुपये मुझे वापस मिल गए। तब से वह ईमानदारी से दूध बेचने लगा। फिर उसने दूध में कभी पानी नहीं डाला।

विद्यार्थियो ! इस प्रकार जो ईमानदारी से काम नहीं करता उसे कभी न कभी अवश्य दंड मिलता है। अतः हमें ईमानदार बनना चाहिए।

छात्रों के लिए ईमानदारी के काम

(१) हम परीक्षा में नकल नहीं लगायेंगे। नकल लगाने में दूसरों की सहायता भी न करेंगे। (२) हम विद्यालय से मिला हुआ लेखन-कार्य अपने परिश्रम से करेंगे। दूसरों की कॉपी से नहीं उतारेंगे। (३) हमसे कोई भूल हो जाये तो हम उसे स्वीकार करेंगे। हम बचने के लिए दूसरों का झूठा नाम नहीं लगायेंगे। (४) किसी की खोयी हुई वस्तु मिलने पर हम उसे अपने पास न रखेंगे। या तो उसके स्वामी के पास पहुंचा देंगे या उचित अधिकारी को सौंप देंगे। (५) हम जिसके हाथ जो बात पक्की करेंगे उसे अवश्य निभायेंगे। झूठे बहाने बनाकर टालमटोल नहीं करेंगे। (६) हम झूठे बहाने बनाकर बनावटी छुट्टी न लेंगे। (७) हम बस में बिना टिकट यात्रा नहीं करेंगे और आधे टिकट के लेने में गलत आयु नहीं बतायेंगे। (८) हम किसी से बिना पूछे उसकी कोई वस्तु न उठायेंगे।

बालकों का शिष्टाचार

कहानी—एक पठान था। एक अफगान था। उन दोनों की आपस में शत्रुता थी। एक दिन पठान ने अफगान को मार डाला और वह भाग गया। अफगान का पिता उससे बदला लेना चाहता था। उसने पठान को बहुत ढूंढ़ा किन्तु वह न मिला। इस प्रकार कई वर्ष बीत गये। इस बीच अफगान ने अपना घर बदल लिया। अब वह एक झोंपड़ी में रहने लगा।

एक दिन हत्यारा पठान घूमता हुआ उधर आ निकला। अफगान की पत्नी ने उसे दूर से पहचान लिया। उसने अपने पति को कहा—"जल्दी करो। अपनी बरछी सम्भालो! हमारे पुत्र का हत्यारा पठान इधर ही आ रहा है।"

इतने में ही वह पठान उनके द्वार तक आ ही पहुंचा और बेहोश होकर गिर पड़ा। उसने पुकारा—'हाय, पानी!' वह रोगी था, तेज धूप में चलते हुए उसे ज्वर हो आया था। पानी न मिलने से उसकी बुरी दशा थी। उसने सोचा, झोंपड़ी में जाकर पानी और सहायता मांगूंगा तो बच जाऊँगा। उसे क्या पता था कि यह उसके शत्रु की झोंपड़ी है।

पठान को बेहोश देखकर अफगान की पत्नी ने फिर कहा—"बहुत अच्छा अवसर है। बरछी उठाओ और इसके पेट में भोंक दो। इसी ने हमारे पुत्र की हत्या की थी। बदला लेने का यह अच्छा अवसर है।"

अफगान ने कहा—"यदि यह मुझे हमारे घर से बाहर कहीं भी मिल जाता तो मैं इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता। किन्तु आज वह रोगी होकर घर आया है। अतः यह हमारा अतिथि है। शिष्टाचार यह है कि घर में आये हुए शत्रु का भी सत्कार करना चाहिए।"

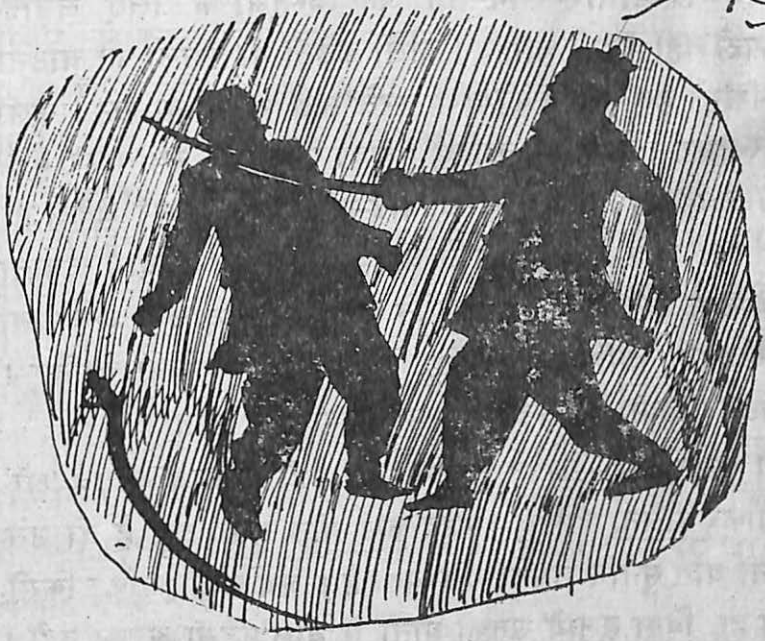

फिर अफगान ने पन्द्रह दिन तक उसकी सेवा में दिन-रात एक कर दिया। जब वह ठीक हो गया तो अफगान ने उसे घोड़े पर विदा किया। जब पठान उसके घर से बहुत दूर एक मैदान में पहुंचा तो अफगान ने उसे युद्ध के लिए ललकारा। युद्ध में पठान मारा गया। इस प्रकार अफगान ने अपने शत्रु के साथ शिष्टाचार का व्यवहार किया।

शिष्टाचार का अर्थ—विद्यार्थियो! अतिथि-सत्कार तो शिष्टाचार का एक अंग है। असल शिष्टाचार का अर्थ है—भले लोगों की तरह व्यवहार करना। इसे सभ्यता भी कहते हैं। शिष्टाचार में अनेक अच्छी बातें आती हैं। इनमें से बहुत-सी बातें तो हमें हमारे माता-पिता और अध्यापक लोग सिखा देते हैं। फिर भी हमें शिष्टाचार की कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कुछ बातें ये हैं—

खानपान के समय शिष्टाचार—खाने-पीने की वस्तुओ क लिए लड़ाई-झगड़ा और छीना-झपटी नहीं करनी चाहिए। काली कसेटी या पत्तलों को चाटना नहीं चाहिए। चलते-फिरते हुए पशुओं की तरह चरते नहीं रहना चाहिए। फलों आदि के छिलके इधर-उधर नहीं फेंकने चाहिए। जूतों में या गंदे स्थान पर बैठ-कर नहीं खाना-पीना चाहिए। मित्रों में और भाई-बहिनों में बैठकर अकेले हो खा-पी जाना अच्छा नहीं। खाते हुए कपड़ों या फर्श आदि पर दाग लगाना बुरा है। अंगुलियां चाटना ठीक नहीं। खाते-पीते समय बहुत बोलना असभ्यता है। भोजन धीरे-धीरे करना चाहिए, न कि पशुओं की तरह निगलना चाहिए। रोटी को दांत से काटकर खाना या बड़े-बड़े ग्रास खाना बुरी बात है।

बोलचाल संबंधी शिष्टाचार—अपने साथियों या बड़ों के नाम से पूर्व 'श्री' या अन्त में 'जी' लगाकर बोलना चाहिए। यदि कोई गीत सुना रहा है तो उसे बीच में टोककर अपनी बात सुनाने लगना असभ्यता है। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे से बात कर रहा हो, बिना बुलाये उनकी बातों में बोल पड़ना अच्छा नहीं।

किसी की पीठ पीछे निंदा नहीं करनी चाहिए। यदि कोई छोटी-सी भी सहायता करे तो उसे 'धन्यवाद' देना चाहिए। विद्यालय में या घर में जोर-जोर से चिल्लाकर बातें करना बुरा है। बात सुनाते समय स्वयं हंसना मूर्खता है। किसी सभा में सभापति की आज्ञा के बिना नहीं बोलना चाहिए। श्रेणी में जब अध्यापक पढ़ा रहा हो तो आपस में बातें करना अच्छा नहीं लगता। गाली देना या खिल्ली उड़ाना बहुत बड़ी नीचता है।

सामान्य व्यवहार में शिष्टाचार–यदि कोई हमारे घर में आये तो उसका सत्कार करना चाहिए। बैठने को आसन, पीने को पानी और 'आइएजी, नमस्ते' आदि मीठे शब्दों से उसका स्वागत करना चाहिए। हम किसी के घर जाएं तो उनकी वस्तुओं को छेड़ें नहीं। खांसते समय मुंह के आगे रूमाल रखना चाहिए। यदि किसी के साथ मिलने का कोई समय निश्चित हुआ है तो वहां अवश्य पहुंचो और समय से पूर्व पहुंचो। यदि भीड़ में किसी से टकरा जाओ तो 'क्षमा कीजिए' कहकर अपनी भूल स्वीकार कर लो। किसी अपाहिज, अन्धे, या लंगड़े को 'अन्धा' आदि कहकर कभी मत पुकारो। दीवारों पर भली-बुरी बातें न लिखो। यदि कोई सो रहा है तो शोर मत करो।

विद्यालय में शिष्टाचार—अध्यापकों के सामने 'सावधान' स्थिति में खड़े होना चाहिए। उनसे बात करते समय मेज पर झुकना या हाथ-पांव हिलाते रहना ठीक नहीं। जब अध्यापक पढ़ा रहे हों तो आपस में बातचीत नहीं करनी चाहिए। विद्यालय की सभा में बैठे हों तो भी चुप रहकर भाषण आदि सुनना चाहिए। श्रेणी के कमरे में शोर मत करो, विशेषकर जब वहां अध्यापक जी न हों। एक-दूसरे छात्र के गले में हाथ डालकर कभी न बैठना या चलना चाहिए। वाचनालय या पुस्तकालय में मौन रहकर पढ़ना चाहिए। लिखते समय पैन को ऐसे न झाड़ना चाहिए कि किसी पर स्याही के छींटे पड़ जायें। स्लेट को थूक लगाकर साफ न करो।

शिष्टाचार के दो नियम सदा याद रखो। बड़े लोग जो काम करने के

लिए कहें, वह करो। जिसके लिए वे मना करें, वह मत करो। सड़क पर और बाग आदि में जैसा नियम हो वैसा ही करो। नियम कभी मत तोड़ो।

छात्रों के लिए शिष्टाचार के काम

१. हम प्रातः उठकर बड़ों को झुककर नमस्कार करेंगे। प्रतिदिन साथियों के मिलने पर हाथ जोड़कर नमस्ते किया करेंगे।

२. 'माताजी', 'पिताजी', 'गुरुजी', 'बहनजी', 'भ्राताजी', 'दीदीजी', 'भैयाजी', 'श्रीमान् रमेशचन्द्र' आदि सम्बोधनों का प्रयोग करेंगे।

३. हम किसी के लिए भी 'तू', 'तुझे,' आदि नहीं कहेंगे। इसके बदले सबके लिए 'आप' का प्रयोग करेंगे।

४. माता-पिता, गुरुजनों तथा बड़ों के आने पर हम खड़े होकर उनका सत्कार करेंगे।

५. हम बिना आज्ञा किसी के कमरे में नहीं जायेंगे।

६. हम श्रेणी में और पुस्तकालय में पढ़ते हुए, भोजन करते हुए और सभा में बैठे हुए बातचीत नहीं करेंगे।

७. हम किसी की थोड़ी-सी भी सहायता के लिए 'धन्यवाद' करेंगे।

८. हम छिलके, कागज आदि इधर-उधर न बखेरकर कूड़ेदान में डालेंगे।

९. हम हंसी-विनोद की बातों में भी शिष्टाचार का पूरा ध्यान रखेंगे। अपनी समान आयु के छात्रों के साथ हंसी-विनोद करेंगे। अपने से बड़ों के साथ दिल्लगी कभी न करेंगे।

१०. हम किसी को वस्तु मांगकर उसे समय पर लौटाना कभी न भूलेंगे। किसी की वस्तु को संभालकर रखेंगे और आवश्यकता पड़ने पर उसे भी अपनी वस्तु देने से हिचकिचाएंगे नहीं।

११. हम दूसरों के सामने अपनी बड़ाई नहीं करेंगे। दूसरों की निंदा भी नहीं करेंगे।

आओ, हम-तुम मित्र बनें

कथा—दो मित्र थे—कृष्ण और सुदामा। कृष्ण धनवान पिता का पुत्र था। सुदामा निर्धन ब्राह्मण का बेटा था। दोनों एक ही गुरु के पास पढ़ते थे। दोनों में बड़ी मित्रता थी। पढ़-लिखकर और बड़े होकर दोनों अपने घरों को चले गए।

कृष्ण राजा बन गए। वे महलों में रहने लगे। सुदामा टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहता था। उसके पास खाने को रोटी न थी। पहनने को कपड़े न थे। एक बार

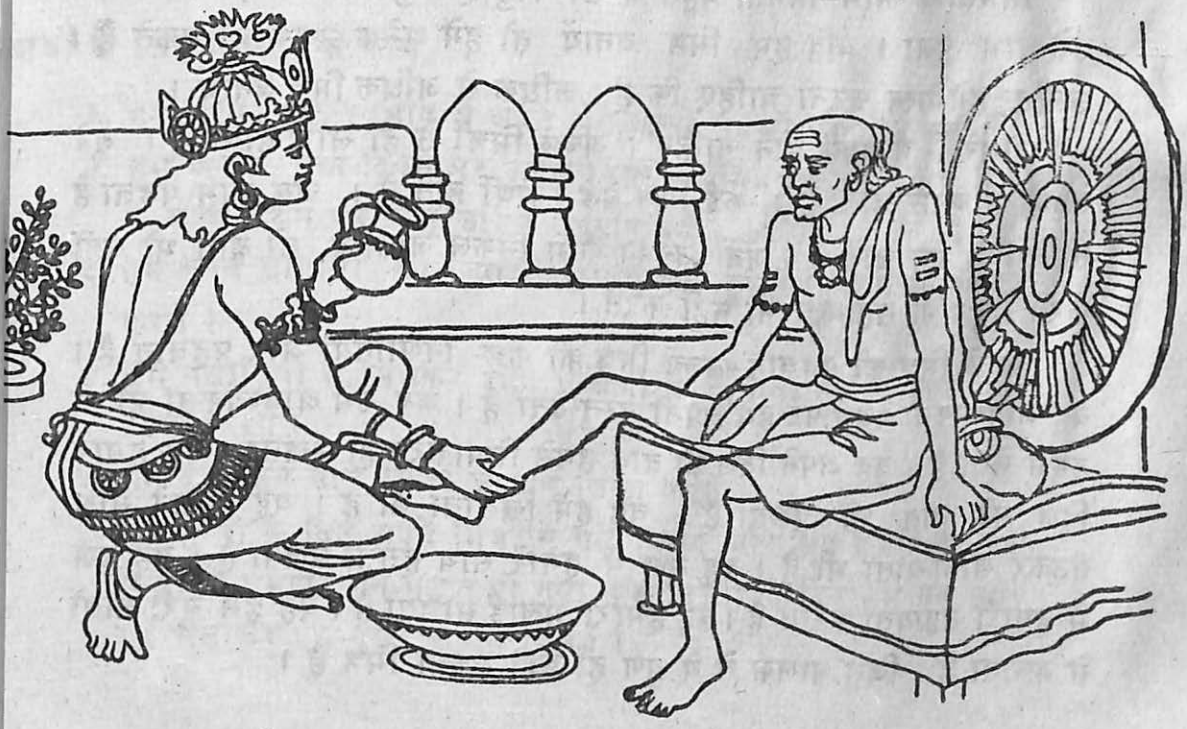

सुदामा कृष्णजी को मिलने गया। कृष्णजी ने अपने मित्र को फटेहाल देखा। पर उन्होंने उसे कुछ नहीं कहा। चुपके से उन्होंने अपने मंत्री को बुलाया और कहा —"मंत्रीजी ! हम सुदामा को कुछ दिन अपने पास रखेंगे। आप चुपके-से उनके गांव जायें। आप उनकी झोंपड़ी की जगह महल बना दें। उनके फटे-पुराने कपड़ों के बदले बढ़िया वस्त्रों के ढेर लगवा दें। उनकी निर्धनता को दूर करके धनवान बना दें।"

मंत्री ने ऐसा ही किया। सुदामा जब अपने गांव पहुंचा तो वह अपने घर को पहचान भी न पाया। बाद में उसे पता चला कि उसके मित्र ने चुपके-चुपके उसके सब दुःख दूर कर दिए हैं।

बालको ! आज भी सुदामा की मित्रता प्रसिद्ध है। जो दो लड़के आपस में पक्के मित्र होते हैं उन्हें कृष्ण सुदामा की जोड़ी कहते हैं।

मित्रता के लाभ—मित्रता बहुत अच्छी वस्तु है। सुदामा का एक मित्र था। उसे लाभ हुआ। यदि हम मित्र बनायें तो हमें अनेक लाभ हो सकते हैं। इसलिए हमें यत्न करना चाहिए कि हम अधिक से अधिक मित्र बनायें।

हमारे मित्र अच्छे होने चाहिएं। अच्छे मित्रों से ही लाभ होता है। बुरे लड़कों से बुराई होती है। कई मित्र बड़े स्वार्थी होते हैं। जब काम पड़ता है तो वे मित्र बन जाते हैं। जब उनका काम निकल जाता है तो बात भी नहीं करते। दुःख में सहायता भी नहीं करते।

अच्छे मित्र की पहचान—अच्छे मित्र की कुछ निशानियां और पहचानें हैं। वह आवश्यकता पड़ने पर हमें अपनी वस्तु देता है। जब उसे आवश्यकता हो तो हमसे लेता है। वह अपने दिल की बात हमसे छिपाकर नहीं रखता। वह हमारे दिल की बातें भी पूछता है। वह हमें खिलाता भी है। वह हमारे साथ बैठकर खाता-पीता भी है। वह सुख में हमारे साथ हंसता-खेलता है। वह दुख में हमारी सहायता करता है। वह हमारी भलाई सोचता है। वह हमें बुरी बातों से बचाता है। जिस बालक में ये गुण हों वही सच्चा मित्र है।

संख्या में हम हजारों लोगों को जानते-पहचानते हैं। किन्तु उनमें से हमारे मित्र आठ-दस ही होते हैं। हमारे मित्रों में भी सच्चे और पक्के मित्र कोई एक-दो ही होते हैं। लाखों रुपये मिल जाना सरल है, किन्तु सच्चा मित्र मिलना उससे भी बड़ी बात है। मित्रता जीवन का एक बहुत बड़ा सुख है।

मित्रता के लाभ—मित्र बनाने के अनेक लाभ हैं। मित्रों से हमारी कठिनाइयां दूर होती हैं। वे दुःख में हमारी सहायता करते हैं। जैसे राम और लक्ष्मण वन में अकेले थे। उधर रावण के पास बहुत बड़ी सेना थी। यदि रामचन्द्रजी किसी को मित्र न बनाते तो उन्हें खोयी हुई सीता न मिलती। सुग्रीव हनुमान आदि मित्रों ने उनकी सहायता की। उनकी मदद से राम-लक्ष्मण ने रावण को हरा दिया। फिर उन्होंने लंका में कैद सीता को छुड़वा लिया। इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हमें अधिक मित्र बनाने चाहिएं।

छात्रों के लिए मित्रता के काम

१. हम आयु, गुण, स्वभाव में अपने जैसे अच्छे लड़कों को मित्र बनाएंगे।
२. हम अपने जन्म-दिवस पर अपने मित्रों को निमंत्रण देंगे। हम मित्रों के जन्म-दिवस पर उन्हें उचित उपहार देंगे।
३. हम अपने साथियों की जिस कठिनाई को दूर कर सकेंगे अवश्य दूर करेंगे।
४. हम पड़ोसियों से मिलकर रहेंगे। श्रेणी के साथियों से मिलकर पढ़ा-लिखा करेंगे।
५. हम दूर रहने वाले मित्रों को पत्र लिखा करेंगे।
६. हम होली के दिन अपने मित्रों से गले मिलेंगे और खूब होली खेलेंगे। किसी से हमारा मन-मुटाव हो गया है तो होली के दिन हम सब मत-भेद भुलाकर एक-दूसरे के गले मिलेंगे।

सुदामा कृष्णजी को मिलने गया। कृष्णजी ने अपने मित्र को फटेहाल देखा। पर उन्होंने उसे कुछ नहीं कहा। चुपके से उन्होंने अपने मंत्री को बुलाया और कहा —"मंत्रीजी ! हम सुदामा को कुछ दिन अपने पास रखेंगे। आप चुपके-से उनके गांव जायें। आप उनकी झोंपड़ी की जगह महल बना दें। उनके फटे-पुराने कपड़ों के बदले बढ़िया वस्त्रों के ढेर लगवा दें। उनकी निर्धनता को दूर करके धनवान बना दें।"

मंत्री ने ऐसा ही किया। सुदामा जब अपने गांव पहुंचा तो वह अपने घर को पहचान भी न पाया। बाद में उसे पता चला कि उसके मित्र ने चुपके-चुपके उसके सब दुःख दूर कर दिए हैं।

बालको ! आज भी सुदामा की मित्रता प्रसिद्ध है। जो दो लड़के आपस में पक्के मित्र होते हैं उन्हें कृष्ण सुदामा की जोड़ी कहते हैं।

मित्रता के लाभ—मित्रता बहुत अच्छी वस्तु है। सुदामा का एक मित्र था। उसे लाभ हुआ। यदि हम मित्र बनायें तो हमें अनेक लाभ हो सकते हैं। इसलिए हमें यत्न करना चाहिए कि हम अधिक से अधिक मित्र बनायें।

हमारे मित्र अच्छे होने चाहिएं। अच्छे मित्रों से ही लाभ होता है। बुरे लड़कों से बुराई होती है। कई मित्र बड़े स्वार्थी होते हैं। जब काम पड़ता है तो वे मित्र बन जाते हैं। जब उनका काम निकल जाता है तो बात भी नहीं करते। दुःख में सहायता भी नहीं करते।

अच्छे मित्र की पहचान—अच्छे मित्र की कुछ निशानियां और पहचानें हैं। वह आवश्यकता पड़ने पर हमें अपनी वस्तु देता है। जब उसे आवश्यकता हो तो हमसे लेता है। वह अपने दिल की बात हमसे छिपाकर नहीं रखता। वह हमारे दिल की बातें भी पूछता है। वह हमें खिलाता भी है। वह हमारे साथ बैठकर खाता-पीता भी है। वह सुख में हमारे साथ हंसता-खेलता है। वह दुख में हमारी सहायता करता है। वह हमारी भलाई सोचता है। वह हमें बुरी बातों से बचाता है। जिस बालक में ये गुण हों वही सच्चा मित्र है।

संख्या में हम हजारों लोगों को जानते-पहचानते हैं। किन्तु उनमें से हमारे मित्र आठ-दस ही होते हैं। हमारे मित्रों में भी सच्चे और पक्के मित्र कोई एक-दो ही होते हैं। लाखों रुपये मिल जाना सरल है, किन्तु सच्चा मित्र मिलना उससे भी बड़ी बात है। मित्रता जीवन का एक बहुत बड़ा सुख है।

मित्रता के लाभ—मित्र बनाने के अनेक लाभ हैं। मित्रों से हमारी कठिनाइयां दूर होती हैं। वे दुःख में हमारी सहायता करते हैं। जैसे राम और लक्ष्मण वन में अकेले थे। उधर रावण के पास बहुत बड़ी सेना थी। यदि रामचन्द्रजी किसी को मित्र न बनाते तो उन्हें खोयी हुई सीता न मिलती। सुग्रीव हनुमान आदि मित्रों ने उनकी सहायता की। उनकी मदद से राम-लक्ष्मण ने रावण को हरा दिया। फिर उन्होंने लंका में कैद सीता को छुड़वा लिया। इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हमें अधिक मित्र बनाने चाहिएं।

छात्रों के लिए मित्रता के काम

१. हम आयु, गुण, स्वभाव में अपने जैसे अच्छे लड़कों को मित्र बनाएंगे।
२. हम अपने जन्म-दिवस पर अपने मित्रों को निमंत्रण देंगे। हम मित्रों के जन्म-दिवस पर उन्हें उचित उपहार देंगे।
३. हम अपने साथियों की जिस कठिनाई को दूर कर सकेंगे अवश्य दूर करेंगे।
४. हम पड़ोसियों से मिलकर रहेंगे। श्रेणी के साथियों से मिलकर पढ़ा-लिखा करेंगे।
५. हम दूर रहने वाले मित्रों को पत्र लिखा करेंगे।
६. हम होली के दिन अपने मित्रों से गले मिलेंगे और खूब होली खेलेंगे। किसी से हमारा मन-मुटाव हो गया है तो होली के दिन हम सब मत-भेद भुलाकर एक-दूसरे के गले मिलेंगे।

अनुशासन में रहने वाले

अनुशासन का अर्थ—अनुशासन का अर्थ है नियमों का पालन करना, अर्थात् नियम से सोना, नियम से जागना, नियम से खाना, नियम से पढ़ना तथा खेलना।

अनुशासन की सच्ची घटना—बगदाद के बादशाह को अनुशासन बहुत प्रिय था। उन्हें शराब से घृणा थी। इसलिए उन्होंने यह घोषणा करवा दी कि उनके राज्य में कोई शराब न पिये। इस नियम का पालन न करने वाले को दरबार में लाकर पचास कोड़े मारे जाते थे।

इस घोषणा से राज्य के सारे शराबी तंग आ गए थे। वे बादशाह की इस घोषणा को बंद करवाना चाहते थे। एक दिन उन्होंने बादशाह के बेटे को खूब शराब पिला दी। राजकुमार शराब पीकर बाजारों में घूमने लगा। कुछ देर बाद सिपाही उसे पकड़कर बादशाह के पास ले गए। बेटे की हालत देखकर बादशाह को बहुत क्रोध आया। अन्य अपराधियों को भांति उसे भी पचास कोड़े मारने की आज्ञा दी गई। इस पर कई लोगों ने कहा—"महाराज यह आपका पुत्र है। इसे दण्ड मत दीजिए।" परन्तु बादशाह ने कहा—"मेरा पुत्र है तो क्या हुआ ? नियम और न्याय सबके लिए एक-सा होता है।"

बादशाह के उत्तर से सब लोग चुप हो गए। राजकुमार को अन्य अपराधियों की भांति पूरे पचास कोड़े लगवाए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा के राज्य में सबने शराब पीना छोड़ दी। उन्हें अब विदित था कि जब बादशाह का बेटा ही अपराध करने पर दण्ड से नहीं बचा तो हम कैसे बच सकते हैं !

अनुशासन के लाभ—अनुशासन के अनेक लाभ हैं। अनुशासन में रहकर ही हम सब काम ठीक कर सकते हैं। सड़क पर चलते समय यदि नियमों का पालन किया जाए तो दुर्घटना नहीं हो सकती। इस प्रकार कई लोग जो बसों और ट्रकों के नीचे कुचल जाते हैं वे बच सकते हैं। विद्यार्थी यदि नियम-पूर्वक पढ़ें तो कभी फेल नहीं हो सकते। नियम से काम करने पर वे सदा उन्नति करेंगे। जिस पाठशाला में अनुशासन अच्छा होगा वहां की पढ़ाई अच्छी होगी। सब बच्चे तथा अध्यापक ठीक समय पर पाठशाला आएंगे। जिस घर में अनुशासन होगा वहां छोटे बड़ों की आज्ञा मानेंगे। बड़े छोटों से प्यार करेंगे। ऐसे परिवार में कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं होता। जिस टीम में अनुशासन होगा वह टीम खेल में जीतेगी। जिस सेना में अनुशासन होगा वह पक्ष लड़ाई में जीतेगा। अर्थात् अनुशासन में रहने से ही सफलता मिलती है। अनुशासन में रहकर निर्बल को बलवान सता नहीं सकता। किसी प्रकार की गड़बड़ी तथा धक्का-मुक्की नहीं होती।

छात्रों के लिए अनुशासन के काम

(१) आज से हम प्रत्येक काम नियम से करेंगे। नियम से उठेंगे, पढ़ेंगे और खायेंगे-पीयेंगे। (२) हम पाठशाला में समय से पांच मिनट पहले जायेंगे, देर से नहीं। (३) यदि अध्यापक जी श्रेणी में नहीं होंगे तो शोर नहीं करेंगे। (४) अध्यापक या किसी अन्य व्यक्ति के आने पर श्रेणी में खड़े होकर उनका स्वागत करेंगे। (५) श्रेणी से बाहर जाना हो तो सदा पूछकर और पास लेकर जाएंगे। (६) प्रार्थना-सभा में बातचीत नहीं करेंगे। (७) सदा पंक्ति में चलेंगे। बस-स्टॉप या किसी ऐसे स्थान पर पंक्ति में खड़े होंगे। (८) अध्यापक पढ़ा रहे हों तो कोई बात नहीं करेंगे। (९) बिना प्रार्थना-पत्र भेजे पाठशाला से अनुपस्थित नहीं होंगे। (१०) सदा अपने माता-पिता तथा गुरुजनों का आदर करेंगे।

Acc. No. 84225
Date 17-1-95
BIRLA

17107

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Sh 24 N
00084225

किताब घर